केन्द्रीय विद्यालय के.रि.पु.ब.
सरायखास

KENDRIYA VIDYALAYA CRPF SARAIKHAS

विद्यालय पत्रिका

VIDYALAYA PATRIKA

2024-25

संदेश

उपायुक्त
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

अत्यंत हर्ष का विषय है कि गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी केन्द्रीय विद्यालय के. रि. पु. ब. सरायखास "वार्षिक पत्रिका" सत्र -2024-25 का प्रकाशन करने जा रहा है|

विद्यालय पत्रिका एक ऐसा महत्वपूर्ण पटल है जो नवोदित लेखकों को अपनी सृजनात्मक क्षमता की अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान करता है । मैं आश्वस्त हूँ कि शिक्षकगण छात्रों को 21वी सदी के नए युग की चुनौतियों का सामना करने के लिए विद्यालय की सभी गतिविधियों में उच्चतम मानकों को बनाए रखने के लिए निरंतर प्रयास करते रहेंगे । मुझे विश्वास है कि विद्यालय पत्रिका छात्रों की रचनात्मक प्रतिभा तथा विद्यालय की गतिविधियों एवं उपलब्धियों को व्यक्त करने का एक अत्यंत प्रभावी मंच प्रदान करेगी । साथ ही ये प्रकाशन ई – पत्रिका के रूप में वर्षवार विद्यालय की वेबसाइट पर भी पाठकों के लिए उपलब्ध हो , ताकि अधिक से अधिक लोगो तक इसकी पहुँच हो ।

मै प्राचार्य , शिक्षकों और छात्रों को विद्यालय के सर्वांगीण विकास के लिए अपनी शुभकामनाएँ देती हूँ ।

(*प्रीति सक्सेना*)

उपायुक्त

अध्यक्ष का संदेश

ये हर्ष का विषय है कि केन्द्रीय विद्यालय ग्रुप केंद्र के.रि.पु. बल सरायखास विद्यालय पात्रिका (पंजाब) 2024-25 का प्रकाशन करने जा रहा है। विद्यालय पत्रिका केवल विद्यार्थियों की सृजनात्मक प्रतिभाओं को ही नहीं दर्शाती है बल्कि उनके प्रकाशित हुए क्रियाकलापों को देखते हुए मन मे गौरवान्वित होने की भावना पैदा कर उनके व्यक्तित्व को निखारने मे भी मदद करती है। मै विद्यालय के अध्यापकों एवं सभी विद्यार्थियों को शुभकामनाएँ प्रदान करता हूँ। अच्छी शिक्षा के अतिरिक्त विद्यार्थियों मे राष्ट्रीय एकता एवं भारतीयता को प्रेरित व प्रोत्साहित करना केन्द्रीय विद्यालय संगठन का एक प्रमुख उद्देश्य है।मै आशा करता हूँ कि विद्यालय शिक्षकों एवं विद्यार्थियों ने अपने मन की बातों को कविता , कहानी , लेख के सहारे सहज भाव से इस पत्रिका के माध्यम से व्यक्त किया है। मैं ये भी आशा करता हूँ कि विद्यालय पत्रिका विद्यालय की प्रगति और कार्य निष्पादन पर भी प्रकाश डालेगी।

मै पुनः इस पत्रिका से जुड़े सभी सदस्यों व विद्यार्थियों और प्रबुद्ध पाठकों को यह पत्रिका तैयार करने मे उनके सृजनात्मक प्रयासों के लिए इस आशा के साथ बधाई देता हूँ कि यह पत्रिका अत्यंत ही रोचक , उपयोगी एव अपने उद्येश्यों को प्राप्त करेगी। मै पूरी तरह आश्वस्त हूँ कि आपकी पत्रिका उसी श्रेष्ठता को लगातार प्रदर्शित करती रहेगी जैसी अपनी पूर्ववर्ती अंको मे कर चुकी है।

श्री राकेश राव

डीआईजी,ग्रुप सेंटर के.रि.पु.ब.सरायखास, जालंधर

अध्यक्ष

विद्यालय प्रबंधन समिति

प्राचार्य की कलम से........

केंद्रीय विद्यालय सरायखास की विद्यालय-पत्रिका के नवीन संस्करण का प्रकाशन असीम हर्ष का विषय है। विद्यालय-पत्रिका विद्यार्थीगण की आंतरिक रचनात्मकता को निखारने का एक सुंदर माध्यम है। वे अपनी कल्पनाशीलता एवं सृजनात्मकता को विद्यालय-पत्रिका के माध्यम से उजागर करते हैं। इसमें बालमन की कोमल कल्पनाएं सुंदर रचनाओं का आकार लेती हैं। यही बालमन बाद में उदीयमान लेखक और कवि के रूप में उभरकर हमारे समक्ष आते हैं। विद्यालय-पत्रिका विद्यार्थियों के हृदय के उद्‌गारों को कृति में ढालने का अनुपम अवसर प्रदान करती है। यह विद्यालय-पत्रिका न केवल सुंदर रचनाओं का संकलन है, अपितु विद्यालय की वर्षभर की उपलब्धियों का प्रतिबिंब भी है। फिर क्षेत्र चाहे शैक्षिक हो या सांस्कृतिक, विज्ञान हो या खेल-कूद प्रत्येक क्षेत्र में प्राप्त उपलब्धियों का विस्तृत विवरण प्रस्तुत करती है। विद्यालय के लिए इसके विद्यार्थी ही विद्यालय की प्रतिष्ठा एवं गौरव के लिए उत्तरदायी हैं। विद्यार्थियों की कर्मनिष्ठा एवं सत्यनिष्ठा ही उनके भविष्य का निर्माण करती है। विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास में विद्यालय उनके सच्चे सह्योगी की भूमिका अदा करता है। विद्यालय के कर्मनिष्ठ एवं निष्ठावान शिक्षकगण न केवल शैक्षिक परीक्षाओं में अपितु जीवन की परीक्षा में भी सफलता प्राप्ति हेतु मार्गदर्शन करने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं।

मैं, विद्यालय प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष, श्री राकेश राव, डीआईजी,ग्रुप सेंटर के.रि.पु.ब.सरायखास, जालंधर , विद्यालय प्रबन्ध समिति के नामित अध्यक्ष, श्री रूप सिंह, डिप्टी कमांडेंट ,ग्रुप सेंटर के.रि.पु.ब.सरायखास, एवम् श्रीमती प्रीति सक्सेना ,उपायुक्त केविसं, क्षेत्रीय कार्यालय चंडीगढ़ का हृदय के अंत:स्थल से आभार व्यक्त करता हूँ। मुझे आपका सहयोग, मार्गदर्शन, प्रेरणा एवं प्रोत्साहन सदैव प्राप्त होता रहा है। विद्यालय के सभी विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं पत्रिका के संपादक मण्डल को उनके सत्प्रयासों हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

"विजेता वे नहीं होते जो कभी अनुत्तीर्ण नहीं होते,

बल्कि वे होते हैं जो कभी हार नहीं मानते।"

डॉ भूषण कुमार

प्राचार्य

केंद्रीय विद्यालय सरायखास

संपादक की कलम से

शिक्षा जगत में विद्यालय पत्रिका विद्यालय की प्रगति ,भावी योजनाओ को प्रस्तुत करने का माध्यम होने के साथ-साथ विद्यार्थियों की लेखन शक्ति विचारों, भावों और कल्पनाओं को अभिव्यक्त करने का सशक्त एवं प्रबल साधन है | प्रस्तुत विद्यालय ई-“पत्रिका के रूप में प्रथम प्रयास है | इस पत्रिका में अधिकतम स्थान छात्रों की रचनाओं को ही प्रदान किया गया है ,तथा संस्था की विविध गतिविधियों,विभागीय परिचय उनके क्रिया-कलापों का संक्षेपित विवरण प्रस्तुत किया गया है | छात्र-छात्राओं ने अत्यंत उत्साह से वृहत संस्था में रचनाएँ देकर अपनी लिखित अभिव्यक्ति तथा मौलिक चिंतन शैली का परिचय दिया है | यह पत्रिका आपके लिए, आपके द्वारा, आपसे प्राप्त सामग्री का प्रस्तुतीकरण है| ,जो हम सभी की प्रेरणा का श्रोत एवं सशक्त आधार है | आशा करती हूँ कि विद्यालय पत्रिका से अवश्य ही छात्रों में नव संचार की अनुभूति होगी |

शुभकामनाओं सहित |

करिश्मा नाज़
स्नातकोतर शिक्षिका(हिंदी)

CHIEF PATRON

Ms. Nidhi Pandey
Commissioner
Kendriya Vidyalaya Sangathan

PATRONS

Mrs. Preeti Saxena
Deputy commissioner
KVS Chandigarh Region

Sh. Gurshakti Singh Sodhi
DIGP(CRPF) JALANDHAR
Chairman VMC

CO-PATRONS

Dr. Bhushan Kumar
Principal

CHIEF EDITOR

Mrs. Karishma Naz
PGT Hindi

EDITOR

Mrs. Vandana, TGT English
Mrs. Maya Meena, TGT Sanskrit
Ms. Rimpy, TGT Punjabi(Contractual)

Staff Members	
1.	Mr. Bhushan Kumar, Principal
2.	Mrs. Sangeeta Rani, PGT Economics
3	Mrs. Narender Kaur, PGT English
4.	Mrs. Meenu Yadav, PGT Commerce
5.	Mr. Rajendar Kumar, PGT Mathematics
6.	Mr. Gurnishan Singh, PGT Computer Science
7.	Mrs. Karishma Naz, PGT Hindi
8.	Mrs. Ramandeep Kaur, TGT Mathematics
9.	Mrs. Vandna, TGT English
10.	Mr. Umesh Kumar, TGT Social Studies
11.	Mrs. Seema Rani, TGT Biology
12.	Mrs. Maya Meena, TGT Sanskrit
13.	Mr. Kapil Dev, TGT Work Education
14.	Mr. Ashish Kumar Dhiman, TGT Physical Education
15.	Mrs. Neelam Rawat, Librarian
16.	Ms. Richa Gaur, PRT
17.	Mrs. Pooja Rani, PRT
18.	Mr. Dinesh, PRT
19.	Mr. Sarjeet Singh, PRT
20.	Mr. Geetanjali, PRT
21.	Mrs. Nisha Mourya, PRT Music
22.	Mr. Deepak Kumar Jangid, SSA
23.	Mr. Rahul Sharma, (JSA)
24.	Mr. Harvinder Singh, Sub Staff
25.	Mr. Ram Krishan, Sub Staff

VIDYALAYA PRIDE

सत्र 2023-24 में शिक्षकों का उत्कृष्ट प्रदर्शन

श्रीमती रमनदीप कौर

प्र .स्ना.शिक्षिकागणित

(विषय - गणित मानक (X) , PI- 65.00, Silver Medal)

(विषय - गणित बेसिक (X) , PI- 79.7, Gold Medal)

श्री राजेन्द्र कुमार

स्नातकोत्तर शिक्षक गणित

(विषय - गणित (XII), PI- 62.5 Silver Medal)

श्री सुखदेव बिरदी

स्नातकोत्तर शिक्षक अर्थशास्त्र

(विषय- अर्थशास्त्र (XII) PI- 63.5, Silver Medal)

श्रीमती मीनू यादव

स्नातकोत्तर शिक्षिका वाणिज्य

(विषय - लेखाशास्त्र (XII), PI- 69.2, Gold Medal)

(विषय - व्यवसायिक अध्ययन(XII) , PI- 60.6, Silver Medal)

श्री उपेन्द्र भट्ट

स्नातकोत्तर शिक्षक संगणक विज्ञान

(विषय- आई पी, PI- 73.4, Gold Medal)

केन्द्रीय विद्यालय के.रि.पु.बल सरायखास, जालंधर
सत्र 2023-24 का परीक्षा परिणाम

शैक्षणिक सत्र 2023-24 कक्षा-12 वाणिज्य संकाय का विद्यालय का परीक्षा परिणाम 100% रहा।

विद्यालय के कक्षा-12 वाणिज्य संकाय के प्रथम तीन स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थी

जगनूर सिंह (91%)

सुदीप्ता सामंता (91%)

पीयूष (84.4%)

अभिषेक कुमार (83.4%)

शैक्षणिक सत्र 2023-24 कक्षा-10 का विद्यालय का परीक्षा परिणाम 100% रहा।

विद्यालय के कक्षा 10 के प्रथम तीन स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थी

दीक्षा(85.8%)

वैष्णवी (83.4%)

प्रियांशु मौर्य (81.8%)

विद्यालय परिवार सभी विद्यार्थियों के उज्जवल भविष्य की कामना करता है

REPUBLIC DAY CELEBRATION

YOGA DAY CELEBRATION

BASANT PANCHAMI CELEBRATION

C.C.A ACTIVITY

ART AND CRAFT ACTIVITY

MORNING ASSEMBLY ACTIVITY

CONSTITUTION DAY
&
PLANTATION DRIVE

TEACHERS DAY CELEBRATION

V.M.C MEETING

F.L.N ACTIVITY

SCOUT & GUIDE ACTIVITY

THINKING DAY

NATIONAL SPORTS DAY

SPORTS DAY CELEBRATION

CLUB ACTIVITIES

हिंदी खंड

प्रकृति

प्रकृति मनुष्य से बहुत पहले से अस्तित्व में है और तब से इसने मानव जाति की देखभाल की है और हमेशा उसका पोषण किया है। प्रकृति के बिना मानव जाति का अस्तित्व असंभव है और मनुष्य को यह समझने की आवश्यकता है।

प्रकृति में अगर हमारी रक्षा करने की क्षमता है ,तो वह पूरी मानव जाति को नष्ट करने की भी क्षमता रखती है। प्रकृति का हर रूप जैसे कि पौधे, जानवर ,नदियां पहाड़, चांद ,सूरज और बहुत कुछ हमारे लिए समान महत्व रखते हैं। एक तत्व की अनुपस्थिति मानव जीवन के कामकाज में तबाही मचाने के लिए पर्याप्त है।

हम अपने स्वस्थ जीवन शैली को स्वस्थ खाने पीने से पूरा करते हैं ,जो प्रकृति हमें देती है। इसी तरह, यह हमें पानी और भोजन प्रदान करती है ,जो हमें ऐसा करने में सक्षम बनाती है बारिश और धूप जीवित रहने के लिए दो सबसे महत्वपूर्ण तत्व प्रकृति से ही प्राप्त होते हैं।

आज के समय में हम लोग प्रकृति को बहुत ही हल्के में ले रहे हैं और इसका परिणाम बर्फानी तूफान, धूल के तूफान, भूकंप, बाढ़ ,हीट वेव, बवंडर, सुनामी ,ज्वालामुखी फटने ,जंगल की आग जैसी प्राकृतिक आपदाओं का सामना करना पड़ रहा है।

हमें प्रकृति को बचाने के लिए तुरंत कठोर कदम उठाने चाहिए ताकि आगे आने वाली पीढ़ी को कोई नुकसान ना हो। हमें स्वार्थी गतिविधियों को रोकना चाहिए और प्राकृतिक संसाधनों को संरक्षित करने की पूरी कोशिश करनी चाहिए ताकि पृथ्वी पर जीवन हमेशा पोषित हो सके।

कृतिका, XII

स्कूल की दुनिया

दिल में है जोश, सांस में तूफ़ान,
ये है अपने स्कूल की दुनिया।
यहाँ आ कर बस हो जाऊं बिंदास।
इकट्ठे होकर प्रोजेक्ट बनाना,
लास्ट डेट के बाद सबमिट करना। होगा क्लास में कभी ध्यान
नहीं, अरे पढाई करना आसान नहीं ।
मच गया शोर हो गई लड़ाई किसी की शर्ट तो किसी की टाई .
अगले ही दिन ये केस हुआ ठंडा, दादागिरी करने का ये सारा फंडा ।
बनते है आपने आप में डॉन, स्कूल के बाद इन्हे पूछेगा कौन ?
अरे छोड़ो ये झगडे बस ध्यान लगाओ, यारो कुछ भी करो बस पास हो जाओ ।
थोड़ा सा पढ़ लो फिर करोगे ऐश, प्लेसमेंट   के बाद बस कैश ही कैश.
यही तो वह दिन है जो याद मुझे आयेंगे   , सोचो तो, यारो बिन कैसे रह पाएँगे।
कॉल तुझे आएगी बिजी तू रहेगा ।
दोस्तो में कभी- कभी रूठना मनाना मिलकर सबकी खिल्ली उड़ाना ।
मैडम जी आएँ तो बीमारी का बहाना, रोज देर से आने का नया बहाना|
लाइफ बनानी है तो केंद्रीय विद्यालय मे ही आइए। कुछ भी कहो स्कूल मस्त है अपना, फ्यूचर के हर स्टूडेंट का है सपना लगता है मुझको ये गाना अधूरा, फिर कभी बैठ के करुँगी इसे पूरा ।
खत्म नहीं होती यह दोस्तों की बाते स्कूल के बाहर तो है दुनिया की लातें।
आ गया वो दिन अब यहाँ से बाहर है जाना, रुकने का यहाँ कोई ना बहाना
बहुत हुए अब मस्ती के ये दिन, अब सारी जिंदगी है दोस्तों के बिन।
याद आएगा स्कूल का जमाना ,क्लासरूम मे बेंचपर तबला बजाना ।
याद ले जाना तुम आँखों में बसा के, दोस्तों को रखना दिल से लगा के सुनो मेरी बात यह शाम हुई रात, पूरे नहीं होते यह दिल के जज्बात। पढ़ लिख लिया अब नौकरी पे जाओ , माता पिता जहाँ कहे वही-फैमिली बसाओ। तुम्हे लाइफ मे जब लगे अकेला, बाइक लेकर हिल स्टेशन पे जाएँगे,मस्ती के दिन यारो फिर से आएंगे।

नीतु , XII

समय का महत्व

समय का हमारे जीवन में बहुत महत्व है। कहा भी गया है यह "समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता " कालचक्र है। इसकी गति कभी नहीं थमती है। समय आता है और चला जाता है। यदि हम समय को देखते

देखते वैसे ही व्यर्थ की बातों में गवां देते हैं तो हम अपना बहुत बड़ा नुकसान कर रहे हैं। समय का महत्व न पहचानने वाला व्यक्ति अपना ही सर्वनाश करता है। एक उर्द के शायर ने भी लिखा है गया वक्त फिर " - "हाथ नहीं आता।

सुहानी, XII

आतममंथन

पूछा जो मैंने एक दिन खुदा से,

अंदर मेरे ये कैसा शोर है,

हंसा मुझ पर फिर बोला

, चाहतें तेरी कुछ और थी,

पर तेरा रास्ता कुछ और है,

रूह को संभालना था तुझे,

पर सूरत सँवारने पर तेरा जोर है,

खुला आसमान, चांद, तारे चाहत है तेरी,

पर बन्द दीवारों को सजाने पर तेरा जोर है,

सपने देखता है खुली फिजाओं के,

पर बड़े शहरों में बसने की कोशिश पुरजोर है....

मोहम्मद साजिद खान, XII

शिक्षा का महत्व

शिक्षा हमारे जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह हमें ज्ञान प्रदान करती है और हमारे व्यक्तित्व को विकसित करती है। शिक्षा के माध्यम से हम विभिन्न विषयों में निपुणता हासिल कर सकते हैं और अपनी सोच को विस्तृत कर सकते हैं।

शिक्षा हमें आत्मनिर्भर और सशक्त बनाती है, जिससे हम अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सकते हैं। यह समाज में सुधार लाने का भी एक महत्वपूर्ण साधन है, जो हमें नैतिक और सामाजिक मूल्यों की समझ प्रदान करती है।

इसके अलावा, शिक्षा हमें तर्कसंगत और सृजनात्मक सोच देती है, जिससे हम समस्याओं का समाधान निकाल सकते हैं। यह हमें हमारी संस्कृति और परंपराओं की जानकारी भी प्रदान करती है, जिससे हम अपनी सांस्कृतिक पहचान बनाए रख सकते हैं।

इस प्रकार, शिक्षा का महत्व अनमोल है। यह न केवल व्यक्तिगत विकास के लिए आवश्यक है बल्कि समाज और राष्ट्र के विकास के लिए भी महत्वपूर्ण है। हमें शिक्षा को अपनी सर्वोच्च प्राथमिकता बनाना चाहिए और प्रत्येक बच्चे को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने का अवसर प्रदान करना चाहिए।

चिराग, XII

भ्रष्टाचार

एक बुरे आचरण से भ्रष्टाचार की शुरुआत होती है जो कि व्यक्ति को निरंतर इस और बढ़ाने के लिए प्रेरित करती है। भ्रष्टाचार से आशय अनैतिक, अनुचित या भ्रष्ट आचरण से है। नीति , नियम या विरुद्ध कार्य व्यवहार करना भ्रष्टाचार कहलाता है। अनैतिक रूप से कमाया हुआ धन, शारीरिक, मानसिक तथा सामाजिक शोषण, यह भी भ्रष्टाचार को प्रदर्शित करते हैं हमारे देश भारत में कुछ वर्षों के आंकड़ों को देख तो कहा जा सकता है कि भ्रष्टाचार हमारे देश की लाईलाज समस्या हो गई है माया और आर्थिक और असमानताएं भी भ्रष्टाचार को बढ़ावा दे सकती हैं, क्योंकि धन और शक्ति वाले व्यक्ति अपने प्रभाव का उपयोग सुविधाओं, सेवाओं को नियम विरुद्ध जल प्राप्त करने तथा बिना किसी कारण के भ्रष्ट आचरण में संलग्न होने के लिए कर सकते हैं

मन्नत शर्मा, VII

ऐसे गुरु को हम करते हैं प्रणाम

जिसे देता है हर व्यक्ति सम्मान, जो करता है वीरों का निर्माण,

जो बनाता है इंसान को इंसान, ऐसे गुरु को हम करते हैं प्रणाम...

अज्ञान को मिटा कर, ज्ञान का दीपक जलाया है, गुरु कृपा से मैंने, ये अनमोल शिक्षा को पाया है...

जो मेरी खुशी के लिए अपनी खुशी भूल जाते हैं वो जो मेरी एक हसीं के लिए कुछ भी कर जाते हैं

आने लगे जो कोई गम मेरी जिंदगी में, वो आने से पहले ही उससे लड़ जाते हैं|

हिमानी , VII

प्रदूषण

प्रदूषण एक गंभीर पर्यावरणीय समस्या है। यह पृथ्वी पर जीवन को प्रभावित कर रहा है। वायु प्रदूषण, जल

प्रदूषण, वाहनों की बढ़ती संख्या की वजह से हानिकारक और जहरीली गैसों का स्तर निरंतर बढ़ता जा रहा है। वहीं दूसरी ओर कारखाने और खुले में आग जलाना, वायु प्रदूषण के मुख्य कारण

हैं। कारखाने भी निर्माण प्रक्रिया के दौरान कुछ विषाक्त गैसें, गर्मी और ऊर्जा रिलीज करती है वायु प्रदूषण इंसान और जानवरों में फेफड़ों के कैंसर सहित अन्य सांस की बीमारियां उत्पन्न कर रही है।

कारखानों , उद्योगो, सीवरेज सिस्टम और खेतों आदि के हानिकारक कचरे का सीधे तौर पर नदियों झीलों और महासागरों के पानी के मुख्य स्रोत मैं मिलना जल प्रदूषण का के कारण है। उर्वरक , कवकनाशी शाकनाशी कीटनाशकों और अन्य कार्बनिक

यौगिकों के उपयोग के कारण भू प्रदूषण होता है। भारी मशीनरी, वाहन , रेडियो , टीवी , स्पीकर आदि द्वारा उत्पन्न ध्वनि , ध्वनि प्रदूषण के कारण है जो की सुनने की समस्याओं और कभी कभी बाहरापन का-कारण बनती है। प्रदूषण पर नियंत्रण पानी के लिए संयुक्त प्रयास की आवश्यकता है जिससे कि हम एक स्वास्थ्य और प्रदूषण मुक्त वातावरण पा सके।

जानवी, VII

आत्मविश्वास

तेरा रास्ता ही खोया है, पर मंजिल तो नहीं।
तू हर बार टूट कर बिखरा है, पर हारा तो नहीं।
अभी है तुझमें ताकत और भी, दुनिया से लड़ने की
थोड़ा गुम सा ही है अभी तू, पर बिखरा तो नहीं।
चल छोड़ ये सब फ़िज़ूल की बाते, इससे भी आगे जिंदगी खड़ी है।
ख्वाब ही तो देखे हैं तूने अभी,पर उन्हे सच कर पाया तो नही।
थोडी सी उम्मीद की लहर को बढ़ा, तू अभी बीज है,खिल पाया तो नही।

कोमल, VII

प्रकृति के रंग

हरीखुशी से आया सावन भर गया मेरा आँगन ।-ही हरी खेतों में बरस रहे हैं बूँदें खुशी-

ऐसा लग रहा है जैसे मन की कलियाँ खिल गयी वैसे ऐसा कि आया बसंत लेके फूलों का जश्न ॥

धूप से व्यासी मेरे तन को बूँदों ने दी ऐसी अंगड़ाई कूद पड़ा मेरा तनमन लगता है मैं हूँ एक दामन |

यह संसार है कितना सुंदर लेकिन लोग नहीं उतने अकलमंद, यही है एक निवेदन न करो प्रकृति का शोषण ॥॥

तुषार बैंस , VIII

प्रेरक शिक्षा

बेहतर शिक्षा सभी के लिए जीवन में आगे बढ़ने और सफलता प्राप्त करने के लिए बहुत आवश्यक है। यह हममें आत्मविश्वास विकसित करने के साथ ही हमारे व्यक्तित्व निर्माण में भी सहायता करती है। स्कूली शिक्षा सभी के जीवन में महान भूमिका निभाती है। पूरे शिक्षा तंत्र को प्राथमिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा और उच्च माध्यमिक शिक्षा जैसे को तीन भागों में बाँटा गया है। शिक्षा के सभी स्तर अपना एक विशेष महत्व और स्थान रखते हैं। हम सभी अपने बच्चों को सफलता की ओर जाते हुए देखना चाहते हैं, जो केवल अच्छी और उचित शिक्षा के माध्यम से ही संभव है।

मनजोत , VIII

जल है तो कल है

जल हमारे जीवन के लिए अभिन्न और महत्वपूर्ण है। यह हमारे शरीर के ऊर्जा स्रोत,स्वास्थ्य और संतुलित विकास का मूल आधार है। जल के बिना हम न तो जीवित रह सकते हैं और न ही कोई जीवनरूपी रचना अस्तित्व में आ सकती है। इसके साथ ही, जल हमे स्वच्छता, संपन्नता और समृद्धि की ओर ले जाता है। यह समुद्र नदियों, झीलों और तालाबों के रूप में प्रकृति मे विद्यमान है और हमें इसे बचाने और संरक्षित रखने की जरूरत है।

माही शुक्ला , VIII

नभ के आंगन में

ऐसा क्या कुछ हुआ कि तुमने आनन फानन में
इंद्रधनुष भर डाले सारे नभ के आँगन में

जीवन जल की झील लबालब नभ के आँगन में
झूम रहा है नंदन कानन नभ के आँगन में

उमड़ घुमड़ फिर आए बादल नभ के आँगन में
श्याम बने घनश्याम बिचरते नभ के आँगन में-

राधा की पाज़ेब चमकती नभ के आँगन में
गूँज उठी बादल की मादल नभ के आँगन में

मन का हंस हुलसता उड़ता नभ के आँगन में
ले फुहार की झीनी चादर नभ के आँगन में

फिर बूँदों का नाच छमाछम जग के आँगन में
खेतों में बाग़ों में बन आँगन आँगन में

फूटे अंकुर बिकसा जीवन जग के आँगन में
छूटे बीर बहूटी के दल कानन कानन में

टूटे सारे बंधन टूटे जग के आँगन में
जड़ जंगम सब नाच रहे जग के आँगन में

नक्श रिवारिया , VIII

कर्मपथ पर......

जीवन जब तक चलेगी जिंदगी की सांसे, कहीं प्यार कहीं टकराव मिलेगा।

कहीं बनेंगे सबंध अंतर्मन से तो, कहीं आत्मीयता का अभाव मिलेगा

कहीं मिलेगी जिंदगी में प्रशंसा तो, कहीं नाराजगियों का बहाव मिलेगा

कहीं मिलेगी सच्चे मन से दुआ तो, कहीं भावनाओं में दुर्भाव मिलेगा।

कहीं बनेंगे पराए रिश्तें भी अपने तो कहीं अपनों से ही खिंचाव मिलेगा।

कहीं होगी खुशामदें चेहरें पर तो, कहीं पीठ पे बुराई का घाव मिलेगा।

तू चलाचल राही अपने कर्मपथ पे, जैसा तेरा भाव वैसा प्रभाव मिलेगा।

रख स्वभाव में शुध्दता का 'स्पर्श' तू, अवश्य जिंदगी का पड़ाव मिलेगा।

किरण , VIII

वक़्त की एक करवट

वक़्त की एक करवट में कुछ सपने थे जो टूट गए वो अपने कैसे अपने थे,

जो सफ़र में पीछे छूट गए जो बने नहीं सारथी साँसों के •,

अब उनसे कैसी शिकायत हो

वो अपने फिर अपने कैसे, जिनमें भी बड़ी सियासत हो

ऋतुओं में अचानक यह क्या शरारत हो रही है नींदें आँखों से कहीं अचानक खो रहीं हैं

रिश्तों में भी फक़्त सियासत हो रही है इच्छाएं भी यहाँ बस पाप बोझ ढो रही हैं...

नैतिक बैंस , VIII

संस्कृत

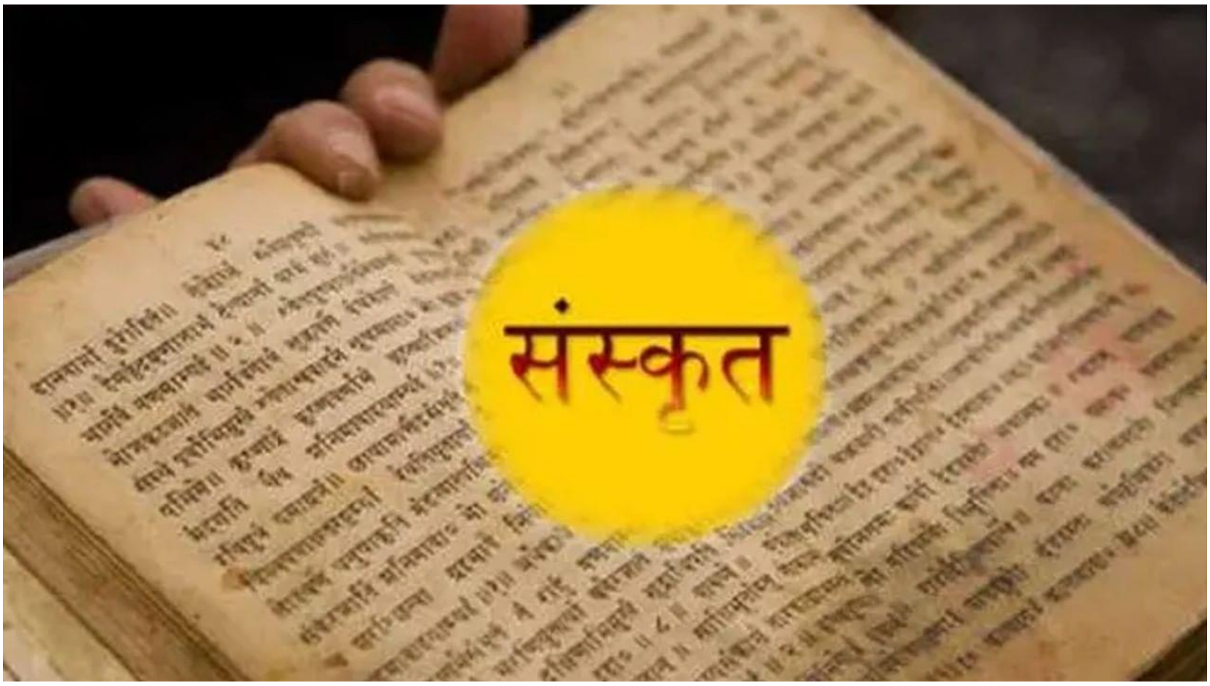

श्लोक

क्षणशः कणशश्चैव विद्यामर्थं च साधयेत् । क्षणे नष्टे कुतो विद्या कणे नष्टे कुतो धनम् ॥

एक एक क्षण गवाये बिना विद्या ग्रहण करनी चाहिए और एक एक कण बचा करके धन ईकट्ठा करना चाहिए। क्षण गवाने वाले को विद्या कहाँ और कण को क्षुद्र समझने वाले को धन कहाँ ?

मन्नत, VII

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः । यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः ॥

अर्थ

जहां महिलाएं पूज्यती हैं, वहां देवताएं रमण करती हैं। और जहां वे नहीं पूज्यती हैं, वहां सभी क्रियाएं व्यर्थ होती हैं॥

जानवी, VII

मम दिनचर्या

प्रत्येकमानवस्य दिनचर्या पृथक् पृथक् भवति | छात्र जीवन पूर्णतः अनुशासनबद्धं भवति ।

अहं प्रतिदिनं प्रातः पञ्चवादने उत्तिष्ठामि। अहं चायस्य एकं चषकं पिबामि। अहं स्वमित्र सह भ्रमणाय गच्छामि ।

भ्रमणानन्तरम् अहं स्नानं करोमि । स्नात्वा विद्यालयं गच्छामि । विद्यालये प्रार्थना-घण्टिका भवति ।

सर्वैः छात्रैः सह प्रार्थनां कृत्वा स्वकक्षायां प्रत्यागच्छामि । तदनन्तरं कक्षायाम् अध्ययन करोमि ।

अर्धावकाशे मित्रेण सह भोजनं करोमि । पूर्ण अवकाशे जाते द्विचक्रिकां गृहीत्वा स्वगृहम् आगच्छामि।

विश्रामं कृत्वा पाठशालायाः गृहकार्यं करोमि । सायङ्काले अहं क्रीडामि । तदनन्तरम् अहम् अधीतपाठानां पुनः अभ्यासं करोमि ।

अहं भोजनं कृत्वा दूरदर्शनं पश्यामि । दशवादने शयनाय गच्छामि । एषा भवति मम दिनचर्या ।

हिमानी, VII

दीपावली:

दीपावली: एकः धार्मिकः उत्सवः अस्ति। अयं उत्सवः शरत्कालस्य मध्ये भवति। अस्मिन् दिने सर्वे जनाः प्रसन्नाः भवन्ति। गृहे गृहे मिष्टानानां निर्माणं भवति। सर्वे लक्ष्मीपूजनं कुर्वन्ति। दीपावली: प्रकाशस्य उत्सवः अस्ति। रात्रौ दीपकानाम् आभा सर्वेषां मनांसि हरति

कोमल, VII

ENGLISH SECTION

SOCIAL MEDIA

Social media is a tool that is becoming quite popular these days because of its user-friendly features. Social media platforms like Facebook, Instagram, Twitter and more are giving people a chance to connect with each other across distances. In other words, the whole world is at our fingertips all thanks to social media. The youth is especially one of the most dominant users of social media. All this makes you wonder that something so powerful and with such a massive reach cannot be all good. Like how there are always two sides to a coin, the same goes for social media. Subsequently, different people have different opinions on this debatable topic. So, in this essay on Social Media, we will see the advantages and disadvantages of social media.

ADVANTAGES OF SOCIAL MEDIA

When we look at the positive aspect of social media, we find numerous advantages. The most important being a great device for education. All the information one requires is just a click away. Students can educate themselves on various topics using social media.

Moreover, live lectures are now possible because of social media. You can attend a lecture happening in America while sitting in India.

Furthermore, as more and more people are distancing themselves from newspapers, they are depending on social media for news. You are always updated on the latest happenings of the world through it. A person becomes more socially aware of the issues of the world.

In addition, it strengthens bonds with your loved ones. Distance is not a barrier anymore because of social media. For instance, you can easily communicate with your friends and relatives overseas.

It also provides a great platform for young budding artists to showcase their talent for free. You can get great opportunities for employment through social media too.

Another advantage definitely benefits companies who wish to promote their brands. Social media has become a hub for advertising and offers you great opportunities for connecting with the customer.

DISADVANTAGES OF SOCIAL MEDIA

Despite having such unique advantages, social media is considered to be one of the most harmful elements of society. If the use of social media is not monitored, it can lead to grave consequences.

It is harmful because it invades your privacy like never before. The oversharing happening on social media makes children a target for predators and hackers. It also leads to cyberbullying which affects any person significantly.

Thus, the sharing on social media especially by children must be monitored at all times. Next up is the addition of social media which is quite common amongst the youth.

This addiction hampers with the academic performance of a student as they waste their time on social media instead of studying. Social media also creates communal rifts. Fake news is spread with the use of it, which poisons the mind of peace-loving citizens.

In short, surely social media has both advantages and disadvantages. But, it all depends on the user at the end. The youth must particularly create a balance between their academic performances, physical activities, and social media. Excess use of anything is harmful and the same thing applies to social media. Therefore, we must strive to live a satisfying life with the right balance.

Shanti kumari, X

Astronomer's Odyssey

In the velvet night, stars ignite,

Galaxies swirl in cosmic flight.

Planets dance in celestial play,

In the vastness where dreams may sway.

Nebulas bloom with colors bright,

A tapestry woven in starlight.

Black holes whisper secrets old,

Where time and space forever unfold.

Telescopes gaze at distant shores,

Exploring realms beyond all doors.

Astronomy, a journey profound,

Where wonder and mystery abound.

Aditi Suman , X

The Role of Education in Society

Education stands as a cornerstone of modern societies, serving a multitude of critical functions that shape individuals, communities, and nations alike. Beyond its fundamental role in imparting knowledge, education plays a pivotal role in fostering social cohesion, economic prosperity, and personal development.

Transmission of Knowledge and Skills

At its core, education serves as the primary vehicle for transmitting knowledge and skills across generations. From basic literacy to specialized fields of study, education equips individuals with the tools to understand the world around them and contribute meaningfully to society. By teaching subjects ranging from mathematics and science to history and the arts, education ensures the continuity of cultural heritage and societal values.

Promotion of Social Cohesion

Education plays a vital role in promoting social cohesion by instilling shared values, ethics, and norms among individuals. Through formal schooling and informal learning experiences, students learn to respect diversity, appreciate different perspectives, and engage in constructive dialogue. Education also fosters empathy and understanding, which are essential for building harmonious communities in a globalized world.

Harmanjeet Singh, X

What I like about my school.

My school is a place that I have grown to truly appreciate over the past few years. There are several reasons why I have come to genuinely like my school.Firstly, the academic environment at my school is incredibly nurturing and supportive. The teachers are all deeply passionate about their subjects and go to great lengths to ensure their students understand the material. They are always available for extra help and guidance, whether it's during class or at office hours.The small class sizes also allow for more personalized attention and opportunities to actively engage with the course content.Ultimately, what I appreciate most about my school is the way it has challenged me academically while also allowing me to grow as a person. The supportive community, engaging curriculum, and beautiful campus all combine to create an experience that I'm truly grateful for. This is why I can say with confidence that I genuinely like my school.Thank you

Ankita.

Class-VIII

Roll No.-04

Guide to Working Together: Benefits and Way to Promote It

What does working together mean ?

Working together is on way a company helps create a more efficient work environment by allowing team members to collaborate and offer help or share advice. the goal is to make achieving goals or completing projects and tasks easier. Beyond improving productivity when employees feel comfortable with the people around them,it can create a more positive work environment.

A workplace that encourages working together creates cohesion among varying departments and teams. These varying groups recognise they share a common goal or motivation to strive toward,which involves supporting the organisation and its needs when a workplace works together effectively the practice also.

Strengthens Bonds : the more these individuals work together,the stronger bonds they can build with these shared experiences, team members can related to one another more closely and may find it easier to collaborate and communicate .

Increases Efficieny : A team that works together assigns tasks that align with the strengths of its members. This allows individuals to maximize their output , raising the overall productivity and efficiency of the team

Provides Additional Support: when team members work together, they can help one another when necessary this assistance can prevent employees from struggling with a task , and everyone can collaborate on ways to resolve team problems

Enhances Learning: team work encourages growth because team members can learn skills or techniques from one one another. They may learn through observation or share advice and guidance about the topics when they have the most expertise

Approaches To Working Together: When encourages individuals to work together there are two primary approaches you can use both options can succeed, and you may find certain situations benefits from One option while others are more suited to the other.

Ways To Promote Working Together: workers working together effectively can lead to positive result for teams and organisation you can use these methods to promote team work and collaboration in a work place

* from cohesion teams

•Promote open communication

•Organize meetings

•Hold team building events

•Provide skill building training

•Set clear goals

•Create mentorship relationship

•Provide fair rewards

•Track results.

"If you can laugh together, you can work together" - Robert Orben

Vani, IX

The Magic of Everyday Moments

In a world often preoccupied with the pursuit of extraordinary achievements, we sometimes overlook the beauty and significance of everyday moments. We're taught to dream big, aim high, and reach for the stars, but what if the true essence of life lies not in the grand gestures, but in the simple, often unnoticed instances that fill our daily lives? Consider the morning routine: the aroma of freshly brewed coffee, the warmth of a comforting breakfast, the soft light of dawn breaking through the window. These seemingly mundane experiences set the tone for the day ahead, grounding us in a sense of normalcy and routine. They are the quiet anchors in the tumultuous sea of our busy schedules. In the classroom, there is a quiet magic in the process of learning. The satisfaction derived from completing a task, the joy of understanding a challenging concept, or the pride in a creative accomplishment – these victories, though they may seem minor in the grand scheme of things, are milestones in our personal journeys. They build our confidence, enrich our knowledge, and prepare us for future challenges.

As students, we often look forward to holidays and vacations, seeing them as breaks from the routine. Yet, it's during these everyday moments that we build the foundation of our lives. Our routines teach us discipline, our interactions foster empathy, and our small achievements boost our self-esteem. Consider the joy of a simple conversation with a friend, where laughter flows easily and concerns are shared. These moments of connection are the essence of human relationships, grounding us in a network of care and support. They remind us that we are not alone in our journey, that we are part of a larger community that values and nurtures us. So, let's celebrate the ordinary. Let's cherish the simple

pleasures and find magic in the mundane. For in these everyday moments, we discover the true richness of life. The tapestry of our existence is woven with these small, precious threads, creating a beautiful, complex, and deeply meaningful pattern. As we go about our daily lives, let us remember that it's not just the big achievements that matter. It's the accumulation of small, seemingly insignificant moments that shapes who we are. By finding joy in the everyday, we cultivate a sense of gratitude and contentment that enriches our lives in profound ways. In conclusion, the magic of everyday moments lies in their ability to ground us, connect us, and remind us of what truly matters. Let's embrace these moments with open hearts and minds, appreciating the beauty and significance they bring to our lives. For in doing so, we not only enrich our own lives but also contribute to a more mindful, compassionate, and joyful world.

Raj Passi, 10th

Social Media

Social media is a tool that has become immensely popular among all generations due to its user-friendly interface. It has been noticed that kids are mostly attracted to social media, and the major users of social media are of their age. This is both remarkable and frightening at the same time. We are so thankful for social media, for all the connections we have made, and for the fact that we now have access to nearly everything in the entire world. But, in the midst of all the transient but fascinating social media trends, we must be careful not to lose our individuality.

The huge reach of social media is a great feature that makes me wonder if there are occasions when it isn't used for good. It's also no surprise that businesses have recognised the impact of social media on our lives and have begun to employ it to their advantage. Social media is advantageous, and at the same time, it is also harmful to ourselves and others if we misuse these platforms.

Kiran, VIII

IMPORTANCE OF MOTHER TONGUE

Your mother tongue is the language you learn naturally from those around you as a child. It's not just your mom's language but also what people in your community speak. And its not only a mother tounge its are emotion ,its our feeling that connets us.

Children feel most comfortable and learn best in their mother tongue during their early years. Imagine asking a child to run with crutches when they can run freely with healthy legs—it's like that. It builds our foundation and strengthen it.

Research shows that when children develop their first language skills, it helps them do better in school. They find it easier to learn to read and write, and this also improves their learning in other languages later on. it help us understand and know the feelings of words as its our language .

In India, learning your mother tongue, like Hindi or other regional languages, is crucial. These languages are phonologically clear, meaning words are pronounced as they're written. This is different from English, which is more complex. It is simple and easy to understand language

When children understand their mother tongue well, it helps them learn other languages, like English. This is because they already know how sounds and words work from their first language. We refer and learn other languages better.

Learning in your mother tongue helps with critical thinking and learning new things. It's easier for children to understand and use their knowledge when they learn in a language they know well. They understand the context and also understand it better and l also help learn faster.

In many countries in Africa and East Asia, schools use a bilingual model successfully. In India, we can learn from these examples to improve our education system.

Learning your community's language isn't just about fitting in—it also builds confidence and helps you do better in school. Its our emotion so show it the best way possible.

Md Shajid Khan, XII

School life

One of the most memorable part of everybody is life. school life is the best time of our life as we make new friends and learn new things each day. I love my school life and I really enjoy it. the students also learn many life skills like teamwork ,good manners etc and understand what they want to become in their life. there are also other activity rooms such as the music room ,art room and library. School life gives us a lot of good and bad memories. even waiting for the exam result with friends become fun. the essence of student life life lies in the little things like getting curious about your friend marks ,getting jealous if the score more and so on .we sometimes forgot to complete our homework and then pretend to find the notebook when teacher ask for it .one of the most exciting thing about student life is getting to go on picnic and trips with your friends.

Suhani, XII

The Need to Save The Water.

In today's world, where water scarcity is becoming an increasingly pressing issue, the need for concerted efforts towards water conservation cannot be overstated. Water, a fundamental resource essential for life, agriculture, industry, and ecosystem stability, is facing unequalled challenges due to climate change, population growth, and unprovably consumption practices. This article explores the critical importance of water conservation and outlines actionable steps that individuals, communities, and governments can take to safeguard this precious resource for future generations.

Water scarcity affects every continent and over 2 billion people globally, according to the United Nations. Regions once considered water-rich are now experiencing droughts, while others face polluted or depleted water sources. The ramifications are far-reaching, impacting agriculture, sanitation, health, and economic stability.

The urgency of water conservation demands collective action at all levels of society. By raising awareness, implementing practical solutions, and advocating for policy changes, we can mitigate water scarcity and ensure a sustainable future for all. Each individual's contribution, no matter how small, plays a vital role in preserving this invaluable resource. Together, let's commit to saving water today for a thriving tomorrow.

Krittika, XII

The Impact of the Internet on Students

The internet has revolutionized students' lives by providing instant access to vast information and resources. Educational websites, online courses, and digital libraries enable students to enhance their learning beyond the classroom, offering tutorials and lectures on almost any subject. Communication and collaboration are also greatly facilitated, allowing students to connect with peers, share ideas, and work together on projects through social media and messaging apps. However, the internet also has its downsides. It can be a major source of distraction, with social media, online games, and streaming services leading to procrastination. Furthermore, the abundance of information can be overwhelming, making it difficult to distinguish credible sources from misinformation. Issues like cyberbullying and privacy concerns also pose significant risks, as students can become targets of online harassment and their personal data can be compromised. Therefore, while the internet is a valuable educational tool, it is essential for students to use it responsibly to reap its benefits without falling prey to its pitfalls.

Jasdeep Kaur, XII

Save Nature

The earth is the home of a millions of species of animals, birds, plants, fishes and insects. Thousands of species have been endangered or extinct. More than these are even today hidden from the outer world of environment and the millions of species. We humans are also a kind of species which is the most intelligent species on the earth today. We have though became much powerful with the help of our knowledge and technology, we doesn't care for the other species on the earth. Much species have became endangered and even extinct by the humans. So, it is now necessary that we should conserve the rest of the left species for our future generations. Government is trying its best by making national parks to conserve the species like cheetals, rhinoceros and many more. We should respect other species on the earth too as well as our own.

ARYAN RAJ, VIII

<u>ਪੰਜਾਬੀ ਅਨੁਭਾਗ</u>

ਬਾਪੂ ਅਤੇ ਧੀ

" ਪੁੱਤਰਾ ਵਾਗ ਖਿਡਾਇਆ,

ਮੈਨੂੰ ਚਾਵਾ ਨਾਲ ਪੜਾਇਆ ਮੈਨੂੰ

ਜਦ ਕੋਈ ਦੁੱਖ ਹੋਵੇ ਮੈਨੂੰ,

ਤੂੰ ਘੁੱਟ ਕੇ ਗੱਲ ਨਾਲ ਲਾਇਆ ਮੈਨੂੰ

ਜੇਬ ਖਾਲੀ ਹੋਵੇ ਭਾਵੇਂ ਤੇਰੀ ਕਦੇ ਬਾਪੂ

ਕਿਸੇ ਚੀਜ਼ ਦੀ ਕਮੀਂ ਨਹੀਂ ਰਹਿਣ ਦਿੱਤੀ

ਖੁਸ਼ੀਆਂ ਤੇ ਚਾਵਾਂ ਨਾਲ ਭਰ ਦਿੱਤੀ ਮੇਰੀ ਝੋਲੀ

ਸਦਾ ਰਹੇ ਤੇਰੇ ਹੱਥ ਦੀ ਛਾਂ ਮੇਰੇ ਸਿਰ ਤੇ ਬਣੀ

ਬਾਪੂ ਤੇਰੀ ਕੀਤੀ ਮਿਹਨਤ ਅਗੇ,

ਸਿਰ ਜਿਹਾ ਸਿਰ ਝੁੱਕ ਜਾਂਦਾ ਏ

ਹਰ ਜਨਮ ਚ ਬਾਪੂ ਤੂੰ ਹੋਵੇ

ਮੈ ਤੇਰੀ ਲਾਡੋ ਧੀ ਹੋਵਾ,

ਰੱਬ ਤੇਰੀ ਉਮਰ ਲੰਬੀ ਕਰੇ

ਹਰ ਵੇਲੇ ਇਹੀ ਅਰਦਾਸ ਕਰਾਂ,

ਦੁੱਖ ਬਾਪੂ ਦਾ ਕਦੇ ਜਰ ਨਹੀਂ ਸਕਦੀ,

ਜੇ ਮੇਰੇ ਵੱਸ ਵਿਚ ਹੋਵੇ

ਕਦੇ ਨਾ ਤੈਨੂੰ ਆਪਣੇ ਤੋ ਦੂਰ ਕਰਾਂ,

ਹਰ ਜਨਮ ਚ ਬਾਪੂ ਤੂੰ ਹੋਵੇਂ

ਮੈ ਤੇਰੀ ਲਾਡੋ ਧੀ ਹੋਵਾ,,

ਕੋਮਲ, 7

ਇਹ ਮੇਰਾ ਪੰਜ਼ਾਬ

''ਫੁੱਲਾਂ ਵਾਂਗ ਮਹਿਕ ਦੀ

ਧਰਤੀ ਇਹ ਮਹਾਨ

ਸਭ ਨੂੰ ਦਿੰਦੀ ਅਸੀਸਾਂ,

ਭਰਦੀ ਹੈ ਝੋਲੀਆਂ

ਦੁਆਵਾਂ ਦੇ ਨਾਲ

ਇਹ ਮੇਰਾ ਪੰਜ਼ਾਬ

ਇਹ ਮੇਰਾ ਪੰਜ਼ਾਬ

ਨੱਚਦੇ ਝੂਮਦੇ ਪੰਜ਼ਾਬੀ

ਗਿੱਧੇ ਤੇ ਭੰਗੜੇ ਦੀ

ਪੈਂਦੀ ਰਹਿੰਦੀ ਧਮਾਲ

ਖੇੜਿਆਂ ਤੇ ਚਾਵਾਂ ਦੀ

ਲੱਗੀ ਰਹਿੰਦੀ ਬਹਾਰ

ਫੁੱਲਾਂ ਵਾਂਗ ਮਹਿਕ ਦੀ

ਧਰਤੀ ਇਹ ਮਹਾਨ

ਇਹ ਮੇਰਾ ਪੰਜ਼ਾਬ

ਇਹ ਮੇਰਾ ਪੰਜ਼ਾਬ

ਠੰਡੇ ਵਗਦੇ ਪਾਣੀ ਤੇ

ਮਿੱਠੇ ਹਵਾ ਦੇ ਬੁੱਲ੍ਹੇ

ਨਾਲ ਝੂਮਦੇ ਹੋਏ

ਖੇਤਾਂ ਚ ਕਣਕਾਂ ਤੇ ਪੈਂਦੀ ਰਹੇ

ਸੂਰਜ ਦੀ ਸੁਨਹਿਰੀ

ਲਿਸ਼ਕਦੀ ਹੋਈ ਚਮਕਾਰ

ਫੁੱਲਾਂ ਵਾਂਗ ਮਹਿਕ ਦੀ

ਧਰਤੀ ਇਹ ਮਹਾਨ

ਇਹ ਮੇਰਾ ਪੰਜ਼ਾਬ

ਇਹ ਮੇਰਾ ਪੰਜ਼ਾਬ

ਜਿਗਰੇ ਦਲੇਰ ਸੱਭਦੇ

ਬਣਕੇ ਪਹਾੜ, ਵੈਰੀ ਮੂਰੇ

ਖੜ ਜਾਣ ਗਬਰੂ ਜਵਾਨ

ਰੱਬ ਕਰੇ ਸਦਾ ਜੀਵਨ ਵਿੱਚ

ਤਰੱਕੀਆਂ ਨੂੰ ਪਾਣ

ਉੱਚੇ ਦਰੱਖਤਾਂ ਦੇ ਵਾਂਗੂ

ਬਣੀ ਰਹੇ ਪੰਜ਼ਾਬ ਦੀ ਸ਼ਾਨ

ਫੁੱਲਾਂ ਵਾਂਗ ਮਹਿਕ ਦੀ

ਧਰਤੀ ਇਹ ਮਹਾਨ

ਇਹ ਮੇਰਾ ਪੰਜ਼ਾਬ

ਇਹ ਮੇਰਾ ਪੰਜ਼ਾਬ

ਰਿੰਪੀ ਦੀ ਲਿੱਖਤ ਰਾਹੀਂ

ਪੰਜ਼ਾਬ ਤੇ ਪੰਜਾਬੀ ਬੋਲੀ ਦਾ

ਹੁੰਦਾ ਰਹੇ ਸਦਾ

ਰੂਹਾਨੀ ਤੇ ਅਦ਼ਬੀ ਗੁਣਗਾਨ

ਫੁੱਲਾਂ ਵਾਂਗ ਮਹਿਕ ਦੀ

ਧਰਤੀ ਇਹ ਮਹਾਨ

ਇਹ ਮੇਰਾ ਪੰਜ਼ਾਬ

ਇਹ ਮੇਰਾ ਪੰਜ਼ਾਬ ”

ਰਿੰਪੀ, ਟੀਜੀਟੀ ਪੰਜਾਬੀ ਅਧਿਆਪਿਕਾ

ਕੇਂਦਰੀ ਵਿਦਿਆਲਿਆ ਕੇ.ਆਰ.ਪੀ.ਯੂ.ਬੀ .ਸਰਾਏਖਾਸ ਜਲੰਧਰ

ਪਾਣੀ ਬਚਾਓ, ਰੁੱਖ ਲਗਾਓ

ਪਾਣੀ ਇੱਕ ਤਰਲ ਪਾਰਦਰਸ਼ੀ ਪਦਾਰਥ ਹੈ | ਜਿਸ ਦਾ ਰਸਾਇਣਿਕ ਸੂਤਰ ਐਚ2ਓ ਹੈ | ਪਾਣੀ ਮਨੁੱਖ ਲਈ ਅਤੇ ਪ੍ਰਿਥਵੀ ਦੇ ਸਾਰੇ ਜੀਵਾਂ ਦੇ ਲਈ ਬੜਾ ਜਰੂਰੀ ਹੈ | ਵੱਧ ਦੀ ਆਬਾਦੀ ਨਾਲ ਪੀਣ ਯੋਗ ਪਾਣੀ ਦੀ ਪੂਰਤੀ ਵਿੱਚ ਕਮੀ ਆ ਰਹੀ ਹੈ |

ਪਾਣੀ ਜੀਵਨ ਦਾ ਆਧਾਰ ਹੈ ,ਇਸ ਲਈ ਪਾਣੀ ਨੂੰ ਬਚਾਉਣਾ ਹਰ ਮਨੁੱਖ ਦੀ ਜ਼ਿੰਮੇਦਾਰੀ ਬਣਦੀ ਹੈ। ਸਾਨੂੰ ਵੱਧ ਤੋਂ ਵੱਧ ਰੁੱਖ ਵੀ ਲਗਾਉਣੇ ਚਾਹੀਦੇ ਹਨ | ਰੁੱਖਾ ਤੋਂ ਸਾਨੂੰ ਫਲ ,ਫੁੱਲ ਤੇ ਠੰਡੀਆਂ ਛਾਵਾਂ ਤੇ ਹਵਾਵਾਂ ਮਿਲਦੀਆਂ ਹਨ। ਰੁੱਖ ਕੁਦਰਤ ਦਾ ਅਨਮੋਲ ਸਰਮਾਇਆ ਹਨ | ਮਨੁੱਖੀ ਜੀਵਨ ਵਿੱਚ ਪਾਣੀ ਦਾ ਬਹੁਤ ਜਿਆਦਾ ਮਹੱਤਵ ਹੈ | ਪਾਣੀ ਸਾਡੇ ਜੀਵਨ ਦਾ ਅਨਮੋਲ ਹਿੱਸਾ ਹੈ | ਜੇਕਰ ਅਸੀਂ ਧਰਤੀ ਨੂੰ ਉਪਜਾਊ ਤੇ ਰਹਿਣ ਯੋਗ ਬਣਾਏ ਰੱਖਣਾ ਹੈ ਤੇ ਸਾਨੂੰ ਰੁੱਖ ਲਗਾਉਣੇ ਚਾਹੀਦੇ ਹਨ ਤੇ ਪਾਣੀ ਨੂੰ ਬਚਾਉਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈਂ | ਸਾਨੂੰ ਲੋੜ ਹੈ ਕਿ ਅਸੀਂ ਪਾਣੀ ਨੂੰ ਵਿਅਰਥ ਜਾਇਆ ਨਾ ਜਾਣ ਦਈਏ। ਇਸ ਨਾਲ ਸਾਰੇ ਜੀਵ ਜੰਤੂਆਂ ਅਤੇ ਮਨੁੱਖਾ ਦਾ ਜੀਵਨ ਭਵਿੱਖ ਵਿੱਚ ਹੋਰ ਵੀ ਵਧੀਆ ਬਣ ਪਾਵੇਗਾ |

" ਜੀਵਨ ਜੀਣ ਲਈ ਹੁੰਦੇ ਨੇ ਹੈ ਖਾਸ ਰੁੱਖ ਤੇ ਪਾਣੀ

ਪਿਆਸ ਲੱਗਣ ਤੇ ਸੱਭ ਭਾਲਦੇ ਨੇ ਪਾਣੀ

ਰੁੱਖਾਂ ਦੀਆਂ ਛਾਵਾਂ ਸੁਣਾਉਂਦੀਆਂ ਨੇ ਮਿੱਠੇ ਗੀਤ

ਵਰਖਾ ਨਾਲ ਸੱਜ ਜਾਂਦੀ ਹੈ ਸਤਰੰਗੀ ਪੀਂਘ

ਰੁੱਖ ਦਿੰਦੇ ਨੇ ਮਨੁੱਖ ਨੂੰ ਫੁੱਲ,ਫੁੱਲ, ਪੌਣ ਤੇ ਪਾਣੀ

ਹਰ ਇੱਕ ਦੀ ਪਿਆਸ ਬੁਝਾਉਂਦਾ ਹੈ ਪਾਣੀ

ਆਓ ਸਾਰੇ ਰਲ ਕੇ ਬਚਾਈਏ ਰੁੱਖ ਤੇ ਪਾਣੀ,

ਨਹੀਂ ਤਾਂ ਮੁਸ਼ਕਿਲ ਹੋ ਜਾਵੇਗੀ

ਧਰਤੀ ਤੇ ਜੀਵਨ ਜਿਉਂਣ ਦੀ ਕਹਾਣੀ ”

ਮੰਨਤ, ਛੇਵੀਂ

ਤਵੱਜੋਂ ਦੀ ਮੁਥਾਜ

ਕੱਲਾ-ਕੱਲਾ ਤਾਰਾ ਜੋ ਚਮਕਦਾ ਹੈ

ਅੰਬਰਾਂ ਚ ਜਿਸ ਦੇ ਟੁੱਟਣ ਦੀ ਨਾ ਆਵਾਜ਼

ਨਾ ਕੋਈ ਅਹਿਸਾਸ ਹੁੰਦਾ ਹੈ

ਸਮਾਂ ਬੀਤ ਜਾਂਦਾ ਕਲਮ ਦੇ ਅੱਖਰਾਂ ਦੇ ਵਾਂਗ

ਲੰਘੇ ਪਾਣੀ ਵਾਂਗ ਕੌਣ ਕਿਸੇ ਦਾ ਮੁਥਾਜ਼ ਹੁੰਦਾ ਹੈ

ਸੋਚ ਕਹਿੰਦੀ ਤੂੰ - ਤੂੰ ਨਹੀਂ

ਸ਼ੀਸ਼ੇ ਚ ਖੁਦ ਦੇ ਦਿਸਦੇ ਅਕਸ ਤੇ

ਮਾਣ ਨਾ ਕਰ ਕਿਉਂਕਿ ਉਹ ਵੀ

ਕੁਝ ਚਿਰ ਲਈ ਮਹਿਮਾਨ ਹੁੰਦਾ ਹੈ

ਜੇ ਗੱਲ ਕਰੀਏ ਇਨ੍ਹਾਂ ਖਾਬਾ ਦੀ

ਖਾਬਾਂ ਵਿੱਚ ਵੇ ਸੁਪਨਿਆਂ ਦਾ ਭਰਮਾਰ ਹੁੰਦਾ ਹੈ

ਰਾਤਾਂ ਲੰਘ ਜਾਂਦੀਆਂ ਉਡੀਕਦੇ ਪੰਧ ਨਹੀਂ ਮੁੱਕਦੇ

ਕਿਉਂਕਿ ਕੱਲਾ ਕੱਲਾ ਤਾਰਾਂ ਜੋ ਚਮਕਦਾ ਹੈ

ਅੰਬਰਾਂ ਚ ਜਿਸ ਦੇ ਟੁੱਟਣ ਦੀ ਨਾ ਆਵਾਜ਼

ਨਾ ਕੋਈ ਅਹਿਸਾਸ ਹੁੰਦਾ ਹੈ

ਰੂਹ ਚੋਂ ਨਿਕਲ ਦੇ ਬੋਲ ਦੇ ਅੱਖਰ

ਉਜਾਗਰ ਕਰਦੇ ਨੇ ਭਾਵਾਂ ਨੂੰ

ਇਹਨਾਂ ਨੂੰ ਸਮਝਣ ਵਾਲਾ ਵੀ ਕੋਈ ਦਾਰੋਮਦਾਰ ਹੁੰਦਾ ਹੈ

ਹਰ ਅੱਖਰ ਦੀ ਹੈ ਬਾਤ ਆਪਣੀ

ਕਿਉਂਕਿ ਕਲਮ ਦੇ ਅੱਖਰਾ ਵਾਂਗ

ਕੌਣ ਕਿਸੇ ਦਾ ਮੁਥਾਜ ਹੁੰਦਾ ਹੈ

ਐਵੇਂ ਨਾ ਤੱਕਿਆ ਕਰ ਅੰਬਰਾਂ ਦੀ ਉਚਾਈ ਨੂੰ

ਕਿਉਂਕਿ ਧਰਤੀ ਤੇ ਖੜਾ ਹੋ ਕੇ ਆਪਣੇ

ਝੁਕੇ ਹੋਣ ਦਾ ਅਹਿਸਾਸ ਹੁੰਦਾ ਹੈ

ਗੱਲਾਂ ਨਾਲ ਜੇ ਗੱਲ ਬਣ ਜਾਵੇ

ਤਾਂ ਕਦਰਾਂ-ਕੀਮਤਾਂ ਨਾਲ ਕਿਸ ਦਾ ਸਰੋਕਾਰ ਹੁੰਦਾ ਹੈ

ਕੱਲਾ ਕੱਲਾ ਤਾਰਾ ਜੋ ਚਮਕਦਾ ਹੈ

ਜਿਸਦੀ ਨਾ ਕੋਈ ਆਵਾਜ਼

ਨਾ ਕੋਈ ਅਹਿਸਾਸ ਹੁੰਦਾ ਹੈ |

ਰਿੰਪੀ, ਟੀਜੀਟੀ ਪੰਜਾਬੀ ਅਧਿਆਪਿਕਾ

ਕੇਂਦਰੀ ਵਿਦਿਆਲਿਆ ਕੇ.ਆਰ.ਪੀ.ਯੂ.ਬੀ .ਸਰਾਏਖਾਸ ਜਲੰਧਰ

ਸੋਹੰ ਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਜੀ ਮਹਾਰਾਜ

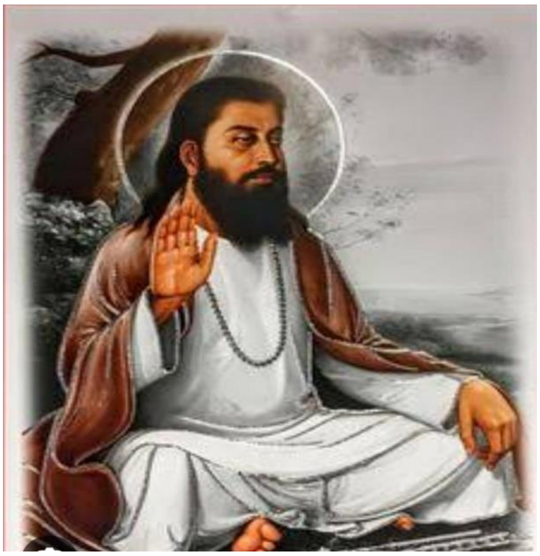

ਐਸੀ ਲਾਲ ਤੁਝ ਬਿਨੁ ਕਉਨੁ ਕਰੈ ॥
ਗਰੀਬ ਨਿਵਾਜੁ ਗੁਸਈਆ ਮੇਰਾ ਮਾਥੈ ਛਤਰੁ ਧਰੈ ॥1॥ਰਹਾਉ॥

ਜਾ ਕੀ ਛੋਤਿ ਜਗਤ ਕਉ ਲਾਗੈ ਤਾ ਪਰ ਤੁਹੀਂ ਢਰੈ ॥
ਨੀਚਹ ਊਚ ਕਰੈ ਮੇਰਾ ਗੋਬਿੰਦੁ ਕਾਹੂ ਤੇ ਨ ਡਰੈ ॥1॥.

ਨਾਮਦੇਵ ਕਬੀਰੁ ਤਿਲੋਚਨੁ ਸਧਨਾ ਸੈਨੁ ਤਰੈ ॥
ਕਹਿ ਰਵਿਦਾਸੁ ਸੁਨਹੁ ਰੇ ਸੰਤਹੁ ਹਰਿ ਜੀਉ ਤੇ ਸਭੈ ਸਰੈ ॥2॥1॥1106॥

ਪਰਮਾਤਮਾ ਦੁਆਰਾ ਰਚੀ ਗਈ ਧਰਤੀ ਤੇ ਕਈ ਗੁਰੂਆ, ਪੀਰਾਂ ਤੇ ਸੰਤਾਂ ਨੇ ਜਨਮ ਲਿਆ | ਉਹਨਾਂ ਵਿੱਚੋਂ ਮਹਾਨ ਗੁਰੂ ਹੋਏ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਜੀ, ਜਿਨਾਂ ਨੇ ਮਨੁੱਖਾ ਨੂੰ ਚੰਗਾ ਤੇ ਸਦਾਚਾਰਕ ਜੀਵਨ ਜਿਉਣ ਦਾ ਸੁਨੇਹਾ ਦਿੱਤਾ |

ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਜੀ ਦਾ ਦਾ ਜਨਮ ਵੀ ਧਰਤੀ ਦੇ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਸੁੱਚਜਾ ਜੀਵਨ ਜਿਉਣ ਦਾ ਸਨੇਹਾ ਦੇਣ ਲਈ ਹੋਇਆ | ਆਪ ਜੀ ਦਾ ਜਨਮ ਮਾਘ ਸੁਦੀ ਪੰਦਰਵੀਂ ਸੰਮਤ ਨੂੰ ਮਾਘ ਦੀ ਪੂਰਨਮਾਸ਼ੀ ਵਾਲੇ ਦਿਨ ਬਨਾਰਸ ਨੇੜੇ (ਈਸਵੀ 1433) 1633 ਵਿਖੇ (ਉੱਤਰ ਪ੍ਰਦੇਸ਼) ਸੀਰ ਗੋਵਰਧਨਪੁਰ ਮਾਤਾ ਕਲਸਾਂ ਦੇਵੀ ਦੀ ਕੁੱਖੋਂ ਪਿਤਾ ਸੰਤੋਖ ਦਾਸ ਦੇ ਘਰ ਹੋਇਆ। ਆਪ ਦਸ ਸਾਲ ਦੀ ਉਮਰ ਤੋਂ ਹੀ ਆਪਣੇ ਪਿਤਾ ਪੁਰਖੀ ਕੰਮ ਚ ਲੱਗ ਗਏ ਸਨ। ਪਰ ਨਾਲੋਨਾਲ ਆਪ ਪ੍ਰਭੂ ਭਗਤੀ ਵਿੱਚ- ਵੀ ਲੀਨ ਰਹਿੰਦੇ ਸਨ। ਆਪ ਸਮਾਜ ਸੁਧਾਰਕ ਤੇ ਅਧਿਆਤਮਕ ਵਿਦਵਾਨ ਹੋਏ |

ਸੰਸਾਰ ਦੇ ਸਾਰੇ ਮਨੁੱਖਾ ਨੂੰ ਆਪਨੇ ਸਦਾ ਪ੍ਰਭੂ ਦੇ ਦਰਸ਼ਾਏ ਹੋਏ ਮਾਰਗ ਤੇ ਜੀਵਨ ਜਿਉਣ ਦੀ ਪ੍ਰੇਰਨਾ ਦਿੱਤੀ | ਆਪ ਜੀ ਦਾ ਵਿਆਹ ਲੋਨਾ ਦੇਵੀ ਦੇ ਨਾਲ ਹੋਇਆ | ਆਪ ਜੀ ਦੇ ਘਰ ਇੱਕ ਪੁੱਤਰ ਨੇ ਜਨਮ ਲਿਆ, ਜਿਸ ਦਾ ਨਾਂ ਵਿਜੈ ਦਾਸ

ਰੱਖਿਆ ਗਿਆ | ਸ਼੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਦੇ ਵਿੱਚ ਵੀ ਸ਼੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਜੀ ਦੀ ਦੁਆਰਾ ਰਚੀ ਹੋਈ ਬਾਣੀ ਦਰਜ ਹੈ | ਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਜੀ ਦੁਆਰਾ ਰਚਿਤ ਸ਼ਬਦ 40 ਤੇ 1 ਸਲੋਕ, ਰਾਗਾਂ ਹੇਠ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਵਿੱਚ ਦਰਜ ਹਨ 16| ਆਪ ਨੇ ਬ੍ਰਜ ਭਾਸ਼ਾ ਰ ,ਅਵਧੀ ,ਾਜਸਥਾਨੀ ਫ਼ਾਰਸੀ ਦੇ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦਾ ਵਰਤੋਂ-ਖੜ੍ਹੀ ਬੋਲੀ ਅਤੇ ਰੇਖਤਾ ਅਰਥਾਤ ਉਰਦੂ , ਬਾਣੀ ਰਚਨਾ ਚ ਕੀਤੀ ਹੈ। ਇਸ ਤੋਂ ਇਲਾਵਾ ਨਾਂ ਦੀ ਇਕ ਹੱਥ ਲਿਖਤ ਕਿਤਾਬ ਨਾਗਰੀ ਪ੍ਰਚਾਰਿਣੀ ਸਭਾ ਕੋਲ ''ਰੈਦਾਸ ਜੀ ਕੀ ਬਾਣੀ`` ਮੌਜੂਦ ਹੈ। ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਭਾਗ ਪੰਜਾਬ ਨੇ ਵੀ ਆਪਜੀ ਦੀਆਂ ਰਚਨਾਵਾਂ ਨੂੰ ''ਬਾਣੀ ਸਤਿਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਜੀ``ਸਿਰਲੇਖ ਅਧੀਨ ਵਿੱਚ ਪਬਲਿਸ਼ ਕੀਤਾ 1984 l ਆਪਨੇ ਅਗਿਆਨਤਾ ਚੋਂ ਨਿਕਲ ਕੇ ਗਿਆਨ ਦੇ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਵੱਲ ਵਧਣ ਲਈ ਆਮ ਮਨੁੱਖਾਂ ਨੂੰ ਪ੍ਰੇਰਿਆ | ਆਪ ਨੇ ਸਮਾਜ ਚ ਫੈਲੀਆਂ ਕੁਰੀਤੀਆਂ ਦਾ ਵਿਰੋਧ ਕੀਤਾ |

ਬੇਗਮ ਪੁਰਾ ਸਹਰ ਕੋ ਨਾਉ ॥

ਦੂਖੁ ਅੰਦੋਹੁ ਨਹੀ ਤਿਹਿ ਠਾਉ ॥

ਨਾਂ ਤਸਵੀਸੁ ਖਿਰਾਜੁ ਨ ਮਾਲੁ ॥
ਖਉਫੁ ਨ ਖਤਾ ਨ ਤਰਸੁ ਜਵਾਲੁ ॥1॥

ਅਬ ਮੋਹਿ ਖੂਬ ਵਤਨ ਗਹ ਪਾਈ ॥
ਊਹਾਂ ਖੈਰਿ ਸਦਾ ਮੇਰੇ ਭਾਈ ॥1॥ਰਹਾਉ॥

ਕਾਇਮੁ ਦਾਇਮੁ ਸਦਾ ਪਾਤਿਸਾਹੀ ॥

ਦੋਮ ਨ ਸੇਮ ਏਕ ਸੋ ਆਹੀ ॥

ਆਬਾਦਾਨੁ ਸਦਾ ਮਸਹੂਰ ॥
ਊਹਾਂ ਗਨੀ ਬਸਹਿ ਮਾਮੂਰ ॥2॥

ਤਿਉ ਤਿਉ ਸੈਲ ਕਰਹਿ ਜਿਉ ਭਾਵੈ ॥

ਮਹਰਮ ਮਹਲ ਨ ਕੋ ਅਟਕਾਵੈ ॥

ਕਹਿ ਰਵਿਦਾਸ ਖਲਾਸ ਚਮਾਰਾ ॥
ਜੋ ਹਮ ਸਹਰੀ ਸੁ ਮੀਤੁ ਹਮਾਰਾ ॥3॥2॥345॥

ਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਜੀ ਨੇ ਉਦਾਸੀਆਂ ਕੀਤੀਆਂ ਸਨ। ਇਨ੍ਹਾਂ ਉਦਾਸੀਆਂ ਵਿੱਚ ਆਪ ਨਾਲ ਉਸ ਸਮੇਂ ਦੇ ਹੋਰ ਸੰਤ 6ਵੀ ਸ਼ਾਮਿਲ ਸਨ। ਆਪ ਨੇ ਪੰਜਾਬ ,ਉੱਤਰਾਖੰਡ ,ਉੱਤਰ ਪ੍ਰਦੇਸ਼ ,ਮੱਧ ਪ੍ਰਦੇਸ਼ ,ਮਹਾਰਾਸ਼ਟਰ ,ਗੁਜਰਾਤ ,ਰਾਜਸਥਾਨ , ਤੇ ਜਾ ਕੇ ਸਤਿਸੰਗ' ਆਂਧਰਾ ਪ੍ਰਦੇਸ਼ ਆਦਿ ਸਥਾਨਾਂ ,ਕਸ਼ਮੀਰ-ਜੰਮੂ ,ਕਰਨਾਟਕਾ ,ਅਸਾਮ ,ਤਾਮਿਲਨਾਡੂ ,ਦਿੱਲੀ ਵੀ ਕੀਤੇ | ਸਤਿਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਜੀ ਅਤੇ ਸੰਤ ਕਬੀਰ ਜੀ ਨੇ ਇਕੱਠਿਆਂ ਬਨਾਰਸ ਤੋਂ ਪਹਿਲੀ ਯਾਤਰਾ ਸ਼ੁਰੂ ਕੀਤੀ | ਆਪ ਜੀ ਦਾ ਜਨਮ ਸਥਾਨ ਬੇਗਮਪੁਰਾ ਸ਼ਹਿਰ ਇਕ ਐਸਾ ਸਥਾਨ ਹੈਜਿੱਥੇ , ਮਨੁੱਖੀ ਜੀਵਨ ਦਾ ਪੂਰਾ ਸਤਿਕਾਰ ਤੇ ਪ੍ਰਭੂ ਦੀ

ਕਿਰਪਾ ਵਿਦਮਾਨ ਹੈਂ | ਆਪ ਨੇ ਕਿਸੇ ਵੀਂ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੀ ਗੁਲਾਮੀ ਦੀ ਵਿਰੋਧਤਾ ਕੀਤੀ | ਆਪ ਜੀ ਨੇ ਹੱਥੀ ਕਿਰਤ ਕਰਨ ਤੇ ਮਿਹਨਤ ਨਾਲ ਜੀਵਨ ਜੀਉਣ ਦਾ, ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਸਨੇਹਾ ਦਿੱਤਾ |

ਤੋਹੀ ਮੋਹੀ ਮੋਹੀ ਤੋਹੀ ਅੰਤਰੁ ਕੈਸਾ ॥
ਕਨਕ ਕਟਿਕ ਜਲ ਤਰੰਗ ਜੈਸਾ ॥1॥

ਜਉ ਪੈ ਹਮ ਨ ਪਾਪ ਕਰੰਤਾ ਅਹੇ ਅਨੰਤਾ ॥
ਪਤਿਤ ਪਾਵਨ ਨਾਮੁ ਕੈਸੇ ਹੁੰਤਾ ॥1॥ਰਹਾਉ॥

ਤੁਮ੍ ਜੁ ਨਾਇਕ ਆਛਹੁ ਅੰਤਰਜਾਮੀ ॥
ਪ੍ਰਭ ਤੇ ਜਨੁ ਜਾਨੀਜੈ ਜਨ ਤੇ ਸੁਆਮੀ ॥2॥

ਸਰੀਰੁ ਆਰਾਧੈ ਮੋ ਕਉ ਬੀਚਾਰੁ ਦੇਹੂ ॥
ਰਵਿਦਾਸ ਸਮ ਦਲ ਸਮਝਾਵੈ ਕੋਊ ॥3॥93॥

ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਜੀ ਨੇ ਹਮੇਸ਼ਾ ਸਭ ਮਨੁੱਖਾਂ ਨੂੰ ਬਰਾਬਰ ਦੱਸਿਆ | ਉਚ ਨੀਚ, ਛੂਤ-ਛਾਤ ਤੇ ਭੇਖ - ਭਖੰਡਾ ਤੋਂ ਉੱਪਰ ਉੱਠ ਕੇ ਮਾਨਵ ਨੂੰ ਆਪਣਾ ਜੀਵਨ ਪ੍ਰਭੂ ਦਾ ਨਾਮ ਧਿਆਉਂਦੇ ਹੋਏ , ਜਿਉਣ ਦੀ ਪ੍ਰੇਰਨਾ ਦਿੱਤੀ | ਪ੍ਰਭੂ ਕਦੇ ਵੀਂ ਜਾਤ ,ਰੰਗ ,ਨਸਲ , ਦੇਸ਼ ਅਤੇ ਧਰਮ ਦੇ ਭੇਦਭਾਵ ਨਹੀਂ ਕਰਦਾ | ਉਸ ਦੀ ਪੂਜਾ ਕਰਨ ਦਾ ਸਾਰਿਆਂ ਨੂੰ ਅਧਿਕਾਰ ਹੈ। ਗੁਰੂ ਜੀ ਇੱਕ ਮਹਾਨ ਸਮਾਜ ਸੁਧਾਰਕ ਵੀ ਹੋਏ | ਸਭ ਨੂੰ ਜੀਵਨ ਦੇਣ ਵਾਲਾ ਪਰਮਾਤਮਾ ਹੈਂ | ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਜੀ , ਸੰਤ ਰਾਮਾਨੰਦ ਜੀ ਦੇ ਚੇਲੇ ਤੇ ਕਬੀਰ ਮਹਾਰਾਜ ਦੇ ਸਮਕਾਲੀ ਸਨ | ਆਪ ਜੀ ਨੇ ਮਨੁੱਖਾਂ ਨੂੰ ਬਰਾਬਰ ਜੀਵਨ ਜਿਉਣ ਦਾ ਸਨੇਹਾ ਦਿੱਤਾ | ਸਤਿਗੁਰੂ

ਰਵਿਦਾਸ ਜੀ ਬਨਾਰਸ ਵਿਖੇ ਜ਼ੋਤੀ ਜੋਤ ਸਮਾਂ ਗਏ | ਸੰਸਾਰ ਨੂੰ ਗੁਰੂ ਜੀ ਦੀਆਂ ਸਿੱਖਿਆਵਾਂ ਗ੍ਰਹਿਣ ਕਰਕੇ ਜਾਤਪਾਤ ਤੇ- ਉੱਚ ਨੀਚ ਦੀ ਸੋਚ ਦਾ ਨਾਸ਼ ਕਰਕੇ, ਸਮਾਨਤਾ ਵਾਲੇ ਸਮਾਜ ਦਾ ਨਿਰਮਾਣ ਕਰਨਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ।

ਰਿੰਪੀ, ਟੀਜੀਟੀ ਪੰਜਾਬੀ ਅਧਿਆਪਿਕਾ

ਕੇਂਦਰੀ ਵਿਦਿਆਲਿਆ ਕੇ.ਆਰ.ਪੀ.ਯੂ.ਬੀ .ਸਰਾਏਖਾਸ ਜਲੰਧਰ

ਸੋਨੇ ਦੇ ਹੱਥ

ਅਮਨ ਪੜ੍ਹਨ ਚ ਬੜੀ ਹੁਸ਼ਿਆਰ ਸੀ | ਅਮਨ ਕੱਲੀ - ਕੱਲੀ ਧੀ ਤੇ ਦੋ ਭਰਾਵਾਂ ਦੀ ਵੱਡੀ ਭੈਣ ਸੀ | ਪਿਤਾ ਦੀ ਮੌਤ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਉਹ ਆਪਣੀ ਮਾਂ ਨਾਲ ਘਰ ਦੇ ਕੰਮਕਾਰ- ਚ ਵੀਂ ਹੱਥ ਵਟਾਉਂਦੀ | ਆਏ ਗਏ ਰਿਸ਼ਤੇਦਾਰਾਂ ਦੇ ਚਾਹ ਪਾਣੀ ਤੇ ਰੋਟੀ ਟੁੱਕ ਦਾ ਕੰਮ ਵੀਂ ਅਮਨ ਚੰਗੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਆਪਣੀ ਮਾਤਾ ਜੀ ਨਾਲ ਰਲ ਕੇ ਕਰਵਾਉਂਦੀ | ਪਿਤਾ ਦੇ ਜਾਣ ਤੋਂ ਬਾਅਦ, ਘਰ ਤੇ ਦਫ਼ਤਰ ਦਾ ਸਾਰਾ ਕੰਮਕਾਜ਼ ਉਸਦੀ ਮਾਂ ਨੇ ਸੰਭਾਲ ਲਿਆ ਸੀ, ਅਮਨ ਵੀਂ ਸਕੂਲ ਤੋਂ ਛੁੱਟੀ ਹੋਣ ਦੇ ਬਾਅਦ ਆਪਣੇ ਮਾਤਾ ਜੀ ਕੋਲ ਦਫ਼ਤਰ ਚਲੀ ਜਾਂਦੀ ਉੱਥੇ ਜਾ ਕੇ ਉਹ ,ਕਾਗਜ ਪੱਤਰ ਤੇ ਜਰੂਰੀ ਦਸਤਾਵੇਜ਼ ਦੀ ਸਾਂਭ ਸੰਭਾਲ ਵੀ ਬੜੇ ਧਿਆਨ ਨਾਲ ਕਰਦੀ | ਇਸ ਤਰਾਂ ਅਮਨ ਦੇ ਵਿੱਚ ਕਿਤਾਬੀ ਪੜ੍ਹਾਈ ਦੇ ਨਾਲ ਨਾਲ, ਦੁਨਿਆਵੀ ਸਮਝ ਵੀ ਵੱਧ ਰਹੀ ਸੀ | ਸਮੇਂ ਦੀਆਂ ਠੋਕਰਾਂ ਦੇ ਨਾਲ ਨਾਲ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਨੂੰ ਜਿਓਣਾ ਤੇ ਛੋਟੀ ਉਮਰੇ ਆਪਣੇ ਮੋਢਿਆਂ ਉੱਤੇ ਜ਼ਿੰਮੇਦਾਰੀਆਂ ਨੂੰ ਹੱਸ ਕੇ ਨਿਭਾਉਣਾ ਉਹ ਸਿੱਖ ਰਹੀ ਸੀ। ਆਪਣੇ ਮਾਤਾ ਜੀ ਦੇ ਨਾਲ ਘਰ ਤੇ ਦਫ਼ਤਰ ਦੀਆਂ ਕੁੱਝ ਜ਼ਰੂਰੀ ਲੋੜਾਂਵੰਦ ਵਸਤਾਂ ਲੈਣ ਲਈ ਬਾਜ਼ਾਰ ਵੀਂ ਉਸ ਨੂੰ ਕਈ ਵਾਰ ਜਾਣਾ ਪੈਂਦਾ ਸੀ। ਇੱਕ ਵਾਰ ਅਮਨ ਸਕੂਲ ਨੂੰ ਜਾ ਰਹੀ ਸੀ, ਤਾਂ ਉਸਦੀਆਂ ਸਹੇਲੀਆਂ ਨੇ ਉਸਦਾ ਮਜ਼ਾਕ ਉਡਾਉਣਾ ਸ਼ੁਰੂ ਕਰ

ਦਿੱਤਾ। ਇੱਕ ਸਹੇਲੀ ਨੇ ਕਿਹਾ, " ਅਮਨ ਦੀ ਤਾਂ ਕਿਸਮਤ ਹੀ ਮਾੜੀ ਹੈ," | ਦੂਜੀ ਸਹੇਲੀ ਨੇ ਕਿਹਾ, " ਅਮਨ ਨਾਲ਼ੇ ਘਰ ਦਾ ਕੰਮ ਕਰਾਉਂਦੀ ਹੈ ਤੇ ਆਪਣੇ ਪਿਤਾ ਜੀ ਦੇ ਦਫਤਰ ਵੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈਂ |" ਅਮਨ ਨੇ ਉਹਨਾਂ ਦੀਆਂ ਗੱਲਾਂ ਸੁਣ ਕੇ ਬੜੀ ਸਮਝਦਾਰੀ ਦੇ ਨਾਲ ਹੱਸਦੇ ਹੋਏ ਆਪਣੀਆਂ ਸਹੇਲੀਆਂ ਨੂੰ ਕਿਹਾ, " ਮੇਰੇ ਹੱਥ ਤਾ ਸੋਨੇ ਦੇ ਨੇ " | ਸਹੇਲੀਆਂ ਉਸਦੀ ਗੱਲ ਸੁਣ ਕੇ , ਲਗਨ ਨਾਲ ਪੇਪਰ ਦਿੱਤੇ ਤੇ ਪੂਰੇ ਰਾਜ ਵਿੱਚ ਪਹਿਲਾਂ ਦਰਜਾ ਹਾਸਲ ਕੀਤਾ | ਸਕੂਲ ਦੇ ਪ੍ਰਿੰਸੀਪਲ ਨੇ ਅਮਨ ਨੂੰ ਵਧਾਈ ਦੇਣ ਤੇ ਉਸਦੀ ਹੋਰ ਹੌਂਸਲਾ ਅਫ਼ਜਾਈ ਦੇ ਲਈ ਸਕੂਲ ਦੇ ਵਿੱਚ ਇੱਕ ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ ਕਰਵਾਇਆ | ਇਸ ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ ਵਿੱਚ ਕਈ ਵੱਡੇ ਸਮਾਜ ਦੇ ਆਗੂ ਨੇਤਾਵਾਂ ਅਤੇ ਸਕੂਲ ਦੇ ਸਾਰੇ ਵਿਦਿਆਰਥੀਆਂ ਨੇ ਆਪਣੇ ਮਾਪਿਆਂ ਦੇ ਨਾਲ ਭਾਗ ਲਿਆ। ਸਕੂਲ ਦੇ ਪ੍ਰਿੰਸੀਪਲ ਨੇ ਅਮਨ ਨੂੰ ਵਧਾਈ ਦਿੱਤੀ ਤੇ ਉਸਦੇ ਗੱਲ ਵਿੱਚ ਫੁੱਲਾਂ ਦਾ ਹਾਰ ਪਾ ਕੇ, ਉਸਦੀ ਮਿਹਨਤ ਤੇ ਲਗਨ ਬਾਰੇ ਆਪਣੇ ਭਾਸ਼ਨ ਰਾਹੀਂ ਦੱਸਦੇ ਹੋਏ ਕਿਹਾ, ਕਿ ਅਮਨ ਦੇ ਹੱਥ ਤਾਂ ਸੋਨੇ ਦੇ ਹਨ, ਉਸਦੇ ਦੁਆਰਾ ਲਿਖਿਆ ਗਿਆ ਹਰ ਇਕ ਅੱਖਰ ਹੀਰੇ ਵਾਂਗ ਚਮਕਦਾ, ਉਹ ਦਿਨ ਦੂਰ ਨਹੀਂ ਜਦੋਂ ਅਮਨ ਦਾ ਨਾਮ ਸੁਨਿਹਰੀ ਅੱਖਰਾਂ ਦੇ ਵਿਚ ਲਿਖਿਆ ਜਾਵੇਗਾ | ਸਾਰੇ ਸਕੂਲ ਦਾ ਹਾਲ ਕਮਰਾ ਤਾਲੀਆਂ ਦੀ ਗੜਗਾਹਟ ਦੇ ਨਾਲ ਗੂੰਜ ਉਠਿਆ | ਉਸ ਦੀਆਂ ਸਹੇਲੀਆਂ ਵੀ ਅਮਨਦੀਪ ਬਹੁਪੱਖੀ ਸ਼ਖ਼ਸੀਅਤ ਤੋਂ ਕਾਫੀ ਪ੍ਰਭਾਵਿਤ ਹੋਈਆਂ | ਅਮਨ ਨਾਲ ਹੱਥ ਮਿਲਾਉਂਦੇ ਹੋਏ ਅਮਨ ਦੀਆਂ ਸਹੇਲੀਆਂ ਤੇ ਚਿਹਰੇ ਤੇ ਸੁਨਹਿਰੀ ਜਿਹੀ ਚਮਕ ਛਾ ਗਈ |

ਰਿੰਪੀ, ਟੀਜੀਟੀ ਪੰਜਾਬੀ ਅਧਿਆਪਿਕਾ

ਕੇਂਦਰੀ ਵਿਦਿਆਲਿਆ ਕੇ.ਆਰ.ਪੀ.ਯੂ.ਬੀ .ਸਰਾਏਖਾਸ ਜਲੰਧਰ

ਸ਼ਰਧਾਂਜਲੀ ਪਦਮ ਸ਼੍ਰੀ ਡਾ : ਸੁਰਜੀਤ ਪਾਤਰ(1945-2024)

ਮਰਣੁ ਮੁਣਸਾ ਸੂਰਿਆ ਹਕੁ ਹੈ ਜੋ ਹੋਇ ਮਰਨਿ ਪਰਵਾਣੋ॥

ਸੂਰੇ ਸੇਈ ਆਗੈ ਆਖੀਅਹਿ ਦਰਗਹ ਪਾਵਹਿ ਸਾਚੀ ਮਾਣੋ॥ ਪੰਨਾ ੫੭੯

ਗੁਰਬਾਣੀ ਅਨੁਸਾਰ ਸਾਡੀ ਆਤਮਾ ਅਮਰ ਹੈ ਤੇ ਕਦੇ ਨਹੀਂ ਮਰਦੀ ਜਦੋਂ ਕਿ ਇਹ ਸਰੀਰ ਫਾਨੀ ਹੈ। ਜਿਹੜੇ ਮਨੁੱਖ ਪ੍ਰਭੂ ਦੀਆਂ ਨਜ਼ਰਾਂ ਵਿੱਚ ਕਬੂਲ ਹੋ ਕੇ ਮਰਦੇ ਹਨ ਉਹ ਸੂਰਮੇ ਹਨ । ਉਹਨਾਂ ਦਾ ਮਰਨਾ ਭੀ ਹਰ ਥਾਂ ਸਲਾਹਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਪ੍ਰਭੂ ਦੀ ਹਜ਼ੂਰੀ ਵਿੱਚ ਉਹ ਬੰਦੇ ਸੂਰਮੇ ਆਖੇ ਜਾਂਦੇ ਹਨ ਤੇ ਉਹ ਪ੍ਰਭੂ ਦੇ ਦਰਬਾਰ ਵਿੱਚ ਸਲਾਹੇ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। **ਪੰਜਾਬੀ ਦੇ ਉੱਘੇ ਕਵੀ ਅਤੇ ਲੇਖਕ ਡਾ ਸੁਰਜੀਤ ਪਾਤਰ .ਦਾ ਸ਼ਨੀਵਾਰ,11 ਮਈ 2024 ਨੂੰ ਚ ਦਿਹਾਂਤ' ਸਾਲ ਦੀ ਉਮਰ ਵਿੱਚ ਲੁਧਿਆਣਾ 79 ਹੋ ਗਿਆ |**

ਸੂਰਜ ਕਿਰਣਿ ਮਿਲੇ ਜਲ ਕਾ ਜਲੁ ਹੂਆ ਰਾਮ॥ ਜੋਤੀ ਜੋਤਿ ਰਲੀ ਸੰਪੂਰਨੁ ਥੀਆ ਰਾਮ॥ ਪੰਨਾ ੮੪੬

ਭਾਵ ਪਾਣੀ ਦਾ ਪਾਣੀ ਬਣ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਤਿਵੇਂ ਜਿੰਦ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦੀ ਜੋਤਿ (ਬਰਫ ਤੋਂ) ਜਿਵੇਂ ਸੂਰਜ ਦੀ ਕਿਰਨ ਨਾਲ ਮਿਲ ਕੇ -:

ਸਾਹਿਤ ਜਗਤ ਨੂੰ ਕਦੇ ਵੀ ਨਾ ਭਰ ਸਕਣ ਵਾਲਾ ਖ਼ਲਾਅ ਦੇ ਕੇ ਸਾਡੇ ਸਮਿਆਂ ਦਾ ਮਹਿਬੂਬ ਸ਼ਾਇਰ ਸੁਰਜੀਤ ਪਾਤਰ ਅਚਾਨਕ ਇਉਂ ਸਾਥੋਂ ਵਿਛੜ ਜਾਵੇਗਾਇਹ ਕਦੇ ਸੋਚਿਆ ਹੀ ਨਹੀਂ ਸੀ। , **ਉਨਾਂ ਦੇ ਸਾਨੂੰ ਛੱਡ ਕੇ ਜਾਣ ਬਾਅਦ ਇੰਝ ਲੱਗਾ ਜਿਵੇਂ,** ਪੰਜਾਬੀ ਸਾਹਿਤ ਦੇ ਇੱਕ ਯੁੱਗ ਦਾ ਅੰਤ ਹੋ ਗਿਆ ਹੈ ।

ਉਦਮ ਸ਼੍ਰੀ ਡਾ: ਸੁਰਜੀਤ ਪਾਤਰ ਦਾ ਜਨਮ ਪਿੰਡ ਪੱਤੜ ਕਲਾਂ ਜ਼ਿਲ੍ਹਾ ਜਲੰਧਰ ਵਿਖੇ ਸ ਹਰਭਜਨ ਸਿੰਘ ਦੇ ਘਰ . ਪਗ ਦੋ ਸਾਲ ਬਾਅਦ ਆਪ-ਵਿੱਚ ਲੈਕਚਰਾਰ ਲੱਗ ਗਏ। ਲਗ (ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ) ਵਿੱਚ ਆਪ ਬਾਬਾ ਬੁੱਢਾ ਕਾਲਜਬੀੜ ਸਾਹਿਬ .ਈ ਖੇਤੀਬਾੜੀ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ ਲੁਧਿਆਣਾ ਵਿੱਚ ਰੀਸਰਚ ਫੈਲੋ ਬਣ ਗਏ।

ਸੁਰਜੀਤ ਪਾਤਰ ਦੀ ਪ੍ਰਸਿੱਧੀ ਇੱਕ ਸਫ਼ਲ ਗਜ਼ਲਕਾਰ ਦੇ ਤੌਰ 'ਤੇ ਹੋਈ। ਆਪ ਨੇ ਪੰਜਾਬੀ ਗਜ਼ਲ ਨੂੰ ਬੌਧਿਕ ਅਤੇ ਯਥਾਰਥਕ ਮਸਲਿਆਂ ਨਾਲ ਜੋੜ ਕੇ ਇੱਕ ਨਵਾਂ ਮੋੜ ਦੇਣ ਦਾ ਯਤਨ ਕੀਤਾ ਹੈ। ਆਪ ਨੇ ਗਜ਼ਲ ਦੇ ਰੂਪਕ ਪੱਖ ਨਾਲੋਂ ਗਜ਼ਲ ਦੇ ਵਿਸ਼ੇ ਵੱਲ ਵਧੇਰੇ ਧਿਆਨ ਦਿੱਤਾ। ਆਪ ਦੀਆਂ ਕੁਝ ਨਜ਼ਮਾਂ 'ਹਵਾ ਵਿੱਚ ਲਿਖੇ ਹਰਫ਼' ਗਜ਼ਲ ਸੰਗ੍ਰਹਿ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ 'ਕੋਲਾਜ਼ ਕਿਤਾਬ' ਵਿੱਚ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਿਤ ਹੋਈਆਂ ਸਨ। ਇਹਨਾਂ ਨਜ਼ਮਾਂ ਵਿੱਚ ਆਪ ਨੇ ਸਮਾਜਿਕ ਅਤੇ ਰਾਜਸੀ ਪ੍ਰਬੰਧ ਉੱਤੇ ਤਿੱਖਾ ਵਿਅੰਗ ਕੀਤਾ ਹੈ। ਆਪ ਨੇ ਰਾਜਸੀ ਪ੍ਰਬੰਧ ਦੀ ਸਥਾਪਤੀ ਦਾ ਵਿਅੰਗਮਈ ਚਿੱਤਰ ਪੇਸ਼ ਕੀਤਾ | ਆਪ ਦੀਆਂ ਤਿੰਨ ਗਜ਼ਲਾਂ 'ਕੁਛ ਕਿਹਾ ਤਾਂ ਹਨੇਰਾ ਜਰੇਗਾ ਕਿਵੇਂ" ,'ਬਲਦਾ ਬਿਰਖ ਹਾਂ' ਅਤੇ 'ਐਵੇਂ ਨਾ ਬੁੱਤਾਂ ਤੇ ਡੋਲ੍ਹੀ ਜਾ ਪਾਣੀ' .ਨੂੰ ਬਹੁਤ ਹੀ ਸਲਾਇਆ ਗਿਆ |

ਆਪਣੇ ਪਿੰਡ ਦੇ ਨਾਂ ਤੋਂ ਹੀ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਆਪਣਾ ਤਖੱਲਸ ਰੱਖ ਲਿਆ।ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ੧੯੬੦ਵਿਆਂ ਵਿੱਚ ਆਪਣੀਆਂ 'ਪਾਤਰ' ਕਵਿਤਾਵਾਂ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਿਤ ਕਰਨੀਆਂ ਸ਼ੁਰੂ ਕੀਤੀਆਂ । ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਸਾਹਿਤ ਅਕਾਦਮੀ ਅਤੇ ਪਦਮ ਸ਼੍ਰੀ ਪੁਰਸ਼ਕਾਰ ਨਾਲ ਵੀ ਸਨਮਾਨਿਆ ਗਿਆ ਹੈ। ਉਹ ਉੱਘੇ ਕਵੀ ਹਵਾ ਵਿੱਚ ਲਿਖੇ :ਅਨੁਵਾਦਕ ਅਤੇ ਸਕ੍ਰਿਪਟ ਲੇਖਕ ਹਨ । ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀਆਂ ਕਾਵਿ ਰਚਨਾਵਾਂ ਹਨ , ਚੰਨ ਸੂਰਜ ਦੀ ਵਹਿੰਗੀ । ਮੈਂ ਰਾਹਾਂ ਤੇ ਨਹੀਂ ਤੁਰਦਾ ਤੁਰਦਾ ਹਾਂ ਤੇ ਰਾਹ ਬਣਦੇ ਜਿਸ ਦੀਆਂ ਕੁਝ ਸਤਰਾਂ ਹੇਠ ਲਿਖਿਆਂ ਅਨੁਸਾਰ ਹਨ

ਇਹ ਕਵਿਤਾ 1980 1970ਵਿਆਂ ਵਿੱਚ ਅਤੇ ਵਿਆਂ ਦੇ ਪਹਿਲੇ ਸਾਲਾਂ ਦੌਰਾਨ ਭਾਰਤੀ ਪੰਜਾਬ ਦੀਆਂ ਵਿਦਿਅਕ ਸੰਸਥਾਵਾਂ ਵਿੱਚ ਇਨਕਲਾਬ ਲੋਚਦੇ ਨੌਜਵਾਨਾਂ ਵਿੱਚ ਖਾਸ ਕਰ ਮਕਬੂਲ ਹੋਈ ਅਤੇ ਬਹੁਤ ਗਾਈ ਗਈ। ਇਸ ਦੇ ਨਾਲ ਨਾਲ ਹੀ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ-ਬੇਇਨਸਾਫੀ ਤੇ ਸਮਾਜਿਕ ਜਟਿਲ ਸਮੱਸਆਵਾਂ ਨੂੰ ਪਾਰਦਰਸ਼ੀ ਰੂਪ ਵਿਚ ਕਲਮਬੰਦ ਕਰਨ ,ਸਮੇਂ ਦੀ ਚੇਤਨਾ ਨੂੰ ਮਾਨਵਵਾਦੀ ਦੀ ਸਫਲ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕੀਤੀ ਹੈ। ਸੁਰਜੀਤ ਪਾਤਰ ਦੁਆਰਾ ਲਿਖੀ ਗਈ ਗਜ਼ਲ ਦੀਆਂ ਕੁਝ ਸਤਰਾਂ ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਅਨੁਸਾਰ ਹਨ ਜਿਸ ਦਾ ਨਾਮ ਹੈ ਕੁਝ ਕਿਹਾ ਤੇ ਹਨੇਰਾ ਜਰੇਗਾ ਕਿਵੇਂ...........

ਕੁਝ ਕਿਹਾ ਤਾਂ ਹਨੇਰਾ ਜਰੇਗਾ ਕਿਵੇਂ
ਚੁੱਪ ਰਿਹਾ ਤਾਂ ਸ਼ਮਾਦਾਨ ਕੀ ਕਹਿਣਗੇ।
ਗੀਤ ਦੀ ਮੌਤ ਇਸ ਰਾਤ ਜੇ ਹੋ ਗਈ
ਮੇਰਾ ਜੀਣਾ ਮੇਰੇ ਯਾਰ ਕਿੰਞ ਸਹਿਣਗੇ।

ਇਸ ਅਦਾਲਤ ਚ ਬੰਦੇ ਬਿਰਖ ਹੋ ਗਏ'

ਫੈਸਲੇ ਸੁਣਦਿਆਂ ਸੁਣਦਿਆਂ ਸੁਕ ਗਏ।
ਆਖੋ ਏਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਉੱਜੜੇ ਘਰੀਂ ਜਾਣ ਹੁਣ
ਇਹ ਕਦੋਂ ਤੀਕ ਇਥੇ ਖੜ੍ਹੇ ਰਹਿਣਗੇ।

ਇਸ ਗਜ਼ਲ ਦੇ ਵਿੱਚ ਸੁਰਜੀਤ ਪਾਤਰ ਜੀ ਨੇ ਸਿਆਸੀ ਹਨੇਰ ਗਰਦੀ ਅਤੇ ਮਨੁੱਖੀ ਬੇਵਸੀ ਅਤੇ ਨਿਰਾਸ਼ਾ ਨੂੰ ਪੇਸ਼ ਕੀਤਾ ਹੈ ਅਨੇਕਾਂ ਨੌਜਵਾਨ ਨੌਕਰੀ ਤੇ ਸਰਕਾਰੀ ਅਦਾਰਿਆਂ ਤੇ ਅਦਾਲਤਾਂ ਦੇ ਵਿੱਚ ਨਿਆ ਦੀ ਆਸ ਦੀ ਉਡੀਕ ਕਰਦਿਆਂ ਕਰਦਿਆਂ- ਉਮਰ ਦੀ ਹੱਦ ਪਾਰ ਕਰ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਅਜਿਹੇ ਸਮਾਜ ਵਿੱਚ ਆਮ ਵਿਅਕਤੀ ਦੀ ਤਰਸਯੋਗ ਹਾਲਤ ਹੈਂ |ਪਾਤਰ ਸੁਚਾਰੂ ਰਾਜਨੀਤਿਕ ਅਤੇ ਜੁੰਮੇਵਾਰ ਇਤਿਹਾਸਿਕ ਸੋਝੀ ਨਾਲ ਵਰੋਸਾਇਆ ਹੋਇਆ ਸ਼ਾਇਰ ਤੇ ਇਤਿਹਾਸ ਪਾਸ ਕਰ ਗੌਰਵਸ਼ਾਲੀ, ਸੱਭਿਆਚਾਰਿਕ ਅਵਚੇਤਨ ਉਸ ਦੇ ਕਾਵਿ ਵਿੱਚ ਇੱਕ ਸ਼ਕਤੀਸ਼ਾਲੀ ਧਾਰਾ ਵਜੋਂ ਪ੍ਰਵਾਹਿਤ ਹੁੰਦਾ ਰਿਹਾ |

ਹੇਠ ਲਿਖੀਆਂ ਕਵਿਤਾ ਦੀਆਂ ਸਤਰਾਂ ਦੇ ਵਿੱਚ ਸੁਰਜੀਤ ਪਾਤਰ ਨੇ ਪੰਜਾਬੀ ਮਾਂ ਬੋਲੀ ਦੇ ਨਾਲ ਆਪਣੇ ਮੋਹ ਨੂੰ ਬੜੇ ਹੀ ਭਾਵਪੂਰਕ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦੇ ਵਿੱਚ ਬਿਆਨ ਕੀਤਾ ਹੈ | ਇਸ ਕਵਿਤਾ ਦੀਆਂ ਕੁਝ ਸਤਰਾਂ ਹੇਠ ਲਿਖਿਆਂ ਅਨੁਸਾਰ ਹਨ , ਮਰ ਰਹੀ ਹੈ ਮੇਰੀ ਭਾਸ਼ਾ ....

ਮਰ ਰਹੀ ਹੈ ਅਪਣੀ ਭਾਸ਼ਾ
ਪੱਤਾ ਪੱਤਾ ਸ਼ਬਦ ਸ਼ਬਦ
ਹੁਣ ਤਾਂ ਰੱਬ ਹੀ ਰਾਖਾ ਹੈ
ਮੇਰੀ ਭਾਸ਼ਾ ਦਾ
ਰੱਬ ?

ਰੱਬ ਤਾਂ ਆਪ ਪਿਆ ਹੈ ਮਰਨਹਾਰ
ਦੌੜੀ ਜਾ ਰਹੀ ਹੈ ਉਸ ਨੂੰ ਛੱਡ ਕੇ
ਉਸ ਦੀ ਭੁੱਖੀ ਸੰਤਾਨ
ਗੌਡ ਦੀ ਪਨਾਹ ਵਿਚ
ਮਰ ਰਹੀ ਹੈ ਮੇਰੀ ਭਾਸ਼ਾ
ਮਰ ਰਹੀ ਹੈ ਬਾਈ ਗੌਡ

ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀਆਂ ਕਵਿਤਾਵਾਂ ਵਿੱਚ ਮਾਂ ਬੋਲੀ ਦੇ ਨਿਘਾਰ ਦਾ ਫਿਕਰ ਨਾਗਰਿਕਤਾ ,ਪੰਜਾਬ ਵਿੱਚ ਹਥਿਆਰਬੰਦ ਸੰਘਰਸ਼ ਦੇ ਦੁਖਾਂਤ , ਸੋਧ ਕਾਨੂੰਨ ਅਤੇ ਕਿਸਾਨੀ ਸੰਘਰਸ਼ ਵਰਗੇ ਵਿਸ਼ੇ ਮਿਲ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਪੰਜਾਬੀ ਬੋਲੀ ਬਾਰੇ ਉਹਬਹੁਤ ਚਿੰਤਤ ਸਨ | ਸੁਰਜੀਤ ਪਾਤਰ ਕ੍ਰਾਂਤੀ ਵਾਲਾ ਸ਼ਾਇਰ ਸੀ | ਸੁਰਜੀਤ ਪਾਤਰ ਦਾ ਕਾਵਿਨਾਇਕ ਕ੍ਰਾਂਤੀਕ-ਾਰੀ ਨਾਇਕ ਨਹੀਂ। ਪਾਤਰ ਦਾ ਨਾਇਕ ਅਜਿਹਾ ਕਾਵਿ ਨਾਇਕ ਹੈ ਜੋ ਕ੍ਰਾਂਤੀ ਦਾ ਪ੍ਰਸੰਸਕ ਹੈ ਕ੍ਰਾਂਤੀ ਦੇ ਸੁਪਨੇ ਦਾ ਹਾਮੀ ਹੈ। ਉਹ ਕ੍ਰਾਂਤੀਕਾਰੀ ਨਾਇਕ ਦੀ ਸੂਰਮਗਤੀ ਤੋਂ ਖੁਰਮਾਨੀ ਨੂੰ ਨਤਮਸਤਕ ਹੈ ਪਰ ਉਹ ਆਪਣਾ ਕਾਵਿ ਨਾਇਕੀ ਬਚਿੱਤਰ ਇੱਕ ਨੌਜਵਾਨ ਸ਼ਾਇਰ ਦੇ ਇੱਕ ਕ੍ਰਾਂਤੀਮੁਖੀ ਰੂਪ- ਵਿੱਚ ਬਿਆਨਦਾ ਹੈ। ਮਿਸਾਲ ਵਜੋਂ ਉਸ ਦੀਆਂ ਕਾਵਿ ਸਤਰਾਂ ਹਨ ....

" ਜਦੋਂ ਤਕ ਲਫਜ਼ ਜਿਊਂਦੇ ਨੇ ਸੁਖਨਵਰ ਜਿਓਣ ਮਰ ਕੇ ਵੀ

ਉਹ ਕੇਵਲ ਜਿਸਮ ਹੁੰਦੇ ਨੇ ਜੋ ਸਿਵਿਆਂ ਵਿਚ ਸੁਆਹ ਬਣਦੇ

ਹਮੇਸ਼ਾ ਲੋਚਿਆ ਬਣਨਾ ਤੁਹਾਡੇ ਪਿਆਰ ਦੇ 'ਪਾਤਰ'
ਕਦੇ ਨਾ ਸੋਚਿਆ ਆਪਾਂ ਕਿ ਅਹੁ ਬਣਦੇ ਜਾਂ ਆਹ ਬਣਦੇ ”

ਪਾਤਰ ਦੀ ਕਾਵਿਕ ਸੰਵੇਦਨਾ ਵਿੱਚ ਪ੍ਰਗਤੀ ਸੁਚੱਜਾ ਤੇ ਉਚੇਰਾ ਸੰਤੁਲਨ ,ਨਵਾਂ ,ਪਿਆਰ ਅਤੇ ਉਦਾਤ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਦਾ ਖ਼ੂਬਸੂਰਤ ,

ਹੈ। ਸੁਰਜੀਤ ਪਾਤਰ ਨੇ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਭਾਗ ਪੰਜਾਬ ਵੱਲੋਂ ਸ਼੍ਰੋਮਣੀ ਕਵੀ ਦਾ ਇਨਾਮਵੀਂ ਲਏ, ਨਾਂਹ ਕਰਨ ਦੀ ਜੁਅੱਰਤ ਵਿਖਾਈ ਹੈ। ਸੁਰਜੀਤ ਪਾਤਰ ਹਮੇਸ਼ਾ ਹੀ ਲੋਕਾਂ ਦੇ ਪਿਆਰ ਦਾ ਪਾਤਰ ਬਣ ਕੇ ਰਿਹਾ |

ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਜੀਵਨ ਦੌਰਾਨ ਕਈ ਇਨਾਮਾ ਸਨਮਾਨਿਤ ਕੀਤਾ ਗਿਆ। ਜਿਵੇਂ ਪੰਜਾਬ ਸਾਹਿਤ ਅਕਾਦਮੀ ਪੁਰਸਕਾਰ — (1979), ਸਾਹਿਤ ਅਕਾਦਮੀ ਪੁਰਸਕਾਰ ਵਿੱਚ (1993)“ਹਨੇਰੇ ਵਿੱਚ ਸੁਲਗਦੀ ਵਰਨਮਾਲਾ” ਲਈ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ , ,(2010) ਲਿਟ ਦੀ ਉਪਾਧੀ .ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ ਤੋਂ ਆਨਰੇਰੀ ਡੀਪਦਮਸ਼੍ਰੀ ਪੁਰਸਕਾਰ ਪੰਜਾਬੀ ਵਿਰ (2012)ਸਾ ਪਾਕਿਸਤਾਨ ਵੱਲੋਂ ਵਾਰਿਸ ਸ਼ਾਹ ਇੰਟਰਨੈਸ਼ਨਲ ਅਵਾਰਡ ਵਿੱਚ ਕੋਲੰਬੀਆ 1999 ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਵਿਸ਼ਵ ਕਵਿਤਾ ਫੈਸਲੀਟਵਲ ਜੋ ।(2022)

ਵਿੱਚ ਹੋਇਆ (ਲੈਟਿਨ ਅਮਰੀਕਾ), ਉੱਥੇ ਵੀ ਭਾਰਤ ਦੀ ਨੁਮਾਇੰਦਗੀ ਕੀਤੀ। ਉਹ ਵਿੱਚ ਫਰੈਂਕਫਰਟ ਪੁਸਤਕ ਮੇਲੇ 2006 ਵਿੱਚ ਵੀ ਕਵੀ ਵਜੋਂ ਸ਼ਾਮਲ ਹੈਂ |

ਪਾਤਰ ਦੀਆਂ ਕਈ ਰਚਨਾਵਾਂ ਹੋਰ ਭਾਸ਼ਾਵਾਂ ਵਿੱਚ ਵੀ ਅਨੁਵਾਦ ਹੋ ਚੁੱਕੀਆਂ ਹਨ। ਉਹ ਹੋਰ ਭਾਸ਼ਾਵਾਂ ਦਾ ਸਹਿਤ ਵੀ ਪੜ੍ਹਦੇ ਰਹਿੰਦੇ ਸਨ। ਉਹ ਹਿੰਦੀ ਉਰਦੂ ਅਤੇ ਅੰਗਰੇਜ਼ੀ ਦੇ ਸਾਹਿਤਾਕਾਰਾਂ ਤੋਂ ਪ੍ਰਭਾਵਿਤ ਸਨ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਆਪ ਵੀ ਅਨੁਵਾਦ ਦਾ ਕੰਮ , ਗਰੀਸ਼ ਕਰਨਾਡ ਦਾ ਨਾਟਕ ਨਾਗਮੰਡਲ ਅਤੇ ,ਕੀਤਾ ਅਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਫੈਡਰੀਸੀਓ ਗਰੇਸੀਆ ਲੌਰਕਾ ਦੇ ਤਿੰਨ ਦੁਖਾਂਤਕ

ਬੇਰਤੋਲਤ ਬਰੈਸ਼ ਅਤੇ ਪਾਬਲੋ ਨਰੂਦਾ ਦੀਆਂ ਕਵਿਤਾਵਾਂ ਦਾ ਪੰਜਾਬੀ ਵਿੱਚ ਅਨੁਵਾਦ ਕੀਤਾ।

ਅਨੁਵਾਦ............

1. ਸਪੇਨੀ ਲੇਖਕ ਲੋਰਕਾ ਦੇ ਤਿੰਨ ਦੁਖਾਂਤ:

1. *ਅੱਗ ਦੇ ਕਲੀਰੇ* (*ਬਲੱਡ ਵੈਡਿੰਗ*)[6]
2. *ਸਈਓ ਨੀ ਮੈਂ ਅੰਤਹੀਣ ਤਰਕਾਲਾਂ* (*ਯੇਰਮਾ*)
3. *ਹੁਕਮੀ ਦੀ ਹਵੇਲੀ* (*ਲਾ ਕਾਸਾ ਡੇ ਬਰਨਾਰਡਾ ਅਲਬਾ*)

1. (ਗਿਰੀਸ਼ ਕਾਰਨਾਡ ਦਾ ਨਾਟਕ) "ਨਾਗ ਮੰਡਲ"
2. ਬ੍ਰੈਖ਼ਤ ਅਤੇ ਨੇਰੂਦਾ ਦੀਆਂ ਕਵਿਤਾਵਾਂ
3. *ਸ਼ਹਿਰ ਮੇਰੇ ਦੀ ਪਾਗਲ ਔਰਤ* ਯਾਂ ਜਿਰਾਦੂ ਦੇ ਫ਼ਰੈਂਚ ਨਾਟਕ) *ਲਾ ਫ਼ੋਲੇ ਡੇ ਸਈਓ*)

ਵਾਰਤਕ

- *ਸੂਰਜ ਮੰਦਰ ਦੀਆਂ ਪੌੜੀਆਂ*
- *ਇਹ ਬਾਤ ਨਿਰੀ ਏਨੀ ਹੀ ਨਹੀਂ* (2022)

ਇਸ ਤੋਂ ਇਲਾਵਾ ਉਹ ਬ੍ਰਿਟੇਨ, ਕੈਨੇਡਾ, ਅਮਰੀਕਾ, ਆਸਟ੍ਰੇਲੀਆ, ਕੀਨੀਆ ਅਤੇ ਨਿਊਜ਼ੀਲੈਂਡ ਵਿੱਚ ਵੀ ਕਵਿਤਾ ਪਾਠ ਲਈ ਗਏ ਸਨ। ਸੁਰਜੀਤ ਪਾਤਰ ਦੀਆਂ ਕਈ ਰਚਨਾਵਾਂ ਹੋਰ ਭਾਸ਼ਾਵਾਂ ਵਿੱਚ ਵੀ ਅਨੁਵਾਦ ਹੋ ਚੁੱਕੀਆਂ ਹਨ।

ਦੇਹੁ ਸਜਣ ਅਸੀਸੜੀਆ ਜ੍ਰਿ ਮੇਲੁ ਉ ਹੋਵੈ ਸਾਹਿਬ ਸਿਓ।।

ਗੁਰਬਾਣੀ ਦੀਆਂ ਉਪਰੋਕਤ ਸਤਰਾਂ ਦਾ ਭਾਵ ਹੈਂ ਕਿ ਇੰਨੀ ਮਹਾਨ ਸ਼ਖਸ਼ੀਅਤ ਤੇ ਨਿਮਰਤਾ ਵਾਲਾ ਜੀਵਨ ਜਿਉਣ ਵਾਲੇ ਸੁਰਜੀਤ ਪਾਤਰ ਨੂੰ ਇਹ ਅਸੀਸ ਦਿਉ ਕਿ ਮਰਨ ਉਪਰੰਤ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਪ੍ਰਭੂ ਨਾਲ ਮਿਲਾਪ ਹੋ ਜਾਵੇ।

ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਜਾਣ ਨਾਲ ਪੰਜਾਬੀ ਸਾਹਿਤ ਨੂੰ ਨਾ ਪੂਰਿਆ ਜਾਣ ਵਾਲਾ ਘਾਟਾ ਪਿਆ ਹੈ। ਸੁਰਜੀਤ ਪਾਤਰ ਬਹੁਤ ਨਰਮ ਸੁਭਾਅ ਦੇ ਸਨ ਅਤੇ ਉੱਚ ਕੋਟੀ ਦੇ ਸ਼ਾਇਰ ਸਨ। ਉਹ ਸਾਡੇ ਦਿਲਾਂ ਦੇ ਵਿੱਚ ਸਦੀਵੀ ਸੁਰਜੀਤ ਰਹਿਣਗੇ | ਉਹਨਾਂ ਦੁਆਰਾ ਹੀ ਲਿਖੀਆਂ ਗਈਆਂ ਕੁਝ ਸਤਰਾਂ ਹੇਠ ਲਿਖਿਆ ਅਨੁਸਾਰ ਹਨ.........

"ਮੈਂ ਤਾਂ ਨਹੀਂ ਰਹਾਂਗਾਮੇਰੇ ਗੀਤ ਰਹਿਣਗੇ ,

ਪਾਣੀ ਨੇ ਮੇਰੇ ਗੀਤਮੈਂ ਪਾਣੀ ਤੇ ਲੀਕ ਹਾਂ , "

. " ਅੰਤ ਵਿੱਚ ਮੈਂ ਰਿੰਪੀ ਇਹੀ ਕਹਾਂਗੀ ਕਿ ਜੀ ਕੇ ਮਰਦੇ ਨੇ ਜੋ, ਮਰ ਕੇ ਜੋ ਜਿਉਂਦੇ ਨੇ

. ਸਦਾ ਰਹਿੰਦੇ ਨੇ ਸਭ ਦੇ ਦਿਲਾਂ ਵਿੱਚ ਵੱਸਦੇ, ਉੱਚੇ ਅਸਮਾਨਾਂ ਤੱਕ ਆਪਣਾ ਨਾਮ ਚਮਕਾਉਂਦੇ ਨੇ,,

ਰਿੰਪੀ, ਟੀਜੀਟੀ ਪੰਜਾਬੀ ਅਧਿਆਪਿਕਾ

ਕੇਂਦਰੀ ਵਿਦਿਆਲਿਆ ਕੇ.ਆਰ.ਪੀ.ਯੂ.ਬੀ .ਸਰਾਏਖਾਸ ਜਲੰਧਰ

जीवन की अभिलाषा

मनुष्य को शरीर इसलिए मिला है कि वह अपने समय तथा जीवन को सफल बना सके. मनुष्य को अपनी सारी जिम्मेदारियों को समझते हुए उन जिम्मेदारियों पर अधिक ध्यान देना चाहिए, जिसके लिए उसे मनुष्य शरीर मिला है. अगर हम अपने जीवन में सचेत होकर चलें कि 'यह जो जीवन मुझे मिला है यदि इसमें मैं एक-एक कदम सोच-समझ कर आगे रखूं, तो आने वाले जीवन में बहुत सी जिम्मेदारियां और बहुत सी समस्याएं होते हुए भी मुझे आनंद ही मिलेगा.' एक छोटी-सी कहानी है. एक बार एक राजा के पास बाहर देश से कुछ लोग आये और कहा कि 'हमें अपने राज्य में जगह दीजिए, जहां हम अपना घर बना सकें!' तो राजा ने कहा, 'मैं आपको एक उदाहरण देता हूं तो उन्होंने दो गिलास दूध मंगवाया, एक बड़े गिलास में और एक छोटे गिलास में. उन्होंने छोटे गिलास का दूध उस बड़े गिलास में डाला. बड़े गिलास में पहले से ही दूध भरा हुआ था तो दूध गिरने लगा. तो राजा ने कहा कि यह हालत है, हमारे यहां पहले से ही जगह नहीं है और अगर आप लोग आ गये तो हम आपको कहां जगह देंगे, इसलिए यहां से चले जाएं.' उनमें से एक व्यक्ति बहुत बुद्धिमान था. उसने कहा, 'अच्छा ठीक है! मैं आपको उत्तर देना चाहता हूं. उसने राजा से कहा कि एक गिलास दूध और चीनी मंगवाइए. उसने चीनी ली और उस दूध के गिलास में डाली और चीनी घोल दी' वह राजा से बोला, 'हम ऐसे हैं, हम आपके राज्य में चीनी की तरह घुल जायेंगे और राज्य में मिठास बढायेंगे.' राजा को उस बुद्धिमान व्यक्ति की बात समझ में आ गयी और उन्होंने उन लोगों को वहां रहने की अनुमति प्रदान कर दी. परिवार में भी कभी-कभी आपस में थोड़ी-बहुत नोक-झोंक होती रहती है, तो क्या घर के सभी सदस्य चीनी नहीं बन सकते ताकि वह घर के माहौल में सबके लिए मिठास ला सकें. कड़वेपन के लिए तो सारी जिंदगी पड़ी है, परंतु बेहतर यही होगा कि हम यह समय मिठास से, आनंद से और समझ से बिताएं.

माया मीना

टी.जी.टी संस्कृत